।। श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः ।।

श्री 1008 विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान एवं इतिहास

मध्य में	-	ह्रं
प्रथम वलय में	-	क्लीं 5
द्वितीय वलय में	-	श्रीं 10
तृतीय वलय में	-	ह्रीं 20
चतुर्थ वलय में	-	ॐ 40
पंचम वलय में	-	卐 80

रचियता

परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी

कृति : **श्री 1008 विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान एवं इतिहास**

कृतिकार : परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संयोजन : मुनि विशालसागरजी एवं क्षुल्लक विदर्शसागरजी

सम्पादन : पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन, रजवांस (सागर)

संकलन : ब्र. ज्योति दीदी, ब्र. आस्था दीदी, ब्र. सपना दीदी
ब्र. सोनू दीदी एवं ब्र. किरण दीदी, आरती दीदी

संस्करण : इक्कीसवाँ **प्रतियाँ** : 1000

सम्पर्क सूत्र : 9829076085, 9829127533

प्राप्ति स्थान

* श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय
बरौदिया कलाँ, जिला-सागर (म.प्र.) फोन : 07581-274244
* श्री विराग साहित्य सदन, गोटेगाँव, जबलपुर (म.प्र.)
* जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा, 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर फोन : 0141-2319907 (घर)
मो.: 9414812008
* विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस, मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर, फोन : 2503253, मो.: 9414054624
* श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार, ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566
* सरस्वती प्रिंटर्स एवं स्टेशनर्स (बसन्त जैन) चाँदी की टकसाल, जयपुर
फोन : 0141-2615520, मो.: 9772220442

पुन : मुद्रण व्यवस्था राशि : 25/-

पुण्य संचयकर्त्ता

श्री इन्द्रमल विनोदकुमार जैन

मु. पोस्ट-लसाड़िया, तह.-शाहपुरा, जिला-भीलवाड़ा ● मो.: 9214034186

मुद्रक : **राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर**
फोन : 0141-2363339, मो.नं. : 9829050791

स्वयं की कलम से

जिन पूजा है कल्पतरु सर्व सुखों की खान।
उभय लोक सुखकर 'विशद', करो प्रभु गुणगान।।

आज के इस भौतिक वादी युग में इन्सान इतना अधिक बिखर चुका है कि उसे संसारिक पदार्थ ही सर्वस्व नजर आते हैं और धर्म–कर्म को भूलकर सांसारिक पदार्थों को एकत्र करने की अंधी दौड़ में दौड़ता है, किन्तु जब थक जाता है तो कभी पीर पैगम्बर और कभी काली भैरों के चक्कर काटने लगता है। जिससे अपने सम्यक्त्व की क्षति कर जिनधर्म को दूषित करता है। ऐसी स्थिति में लोगों को जिनधर्म से जुड़े रहने के लिए सांसारिक पदार्थों के लिए पुण्य संचय हेतु जिन देव–शास्त्र–गुरु की आराधना ही सर्वोपरि है। पुण्य से सारी सुख सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। पुण्य संचय हो और इन्सान सुखी और समृद्ध हो एवं सम्यक्त्व को प्राप्त कर परम्परा से रत्नत्रय का आराधन कर मोक्ष प्राप्त कर सके। इस हेतु इस **''श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान''** की रचना की गई। हमें विश्वास है कि अवश्य ही अधिक से अधिक लोग यह पूजन विधान करके धर्म लाभ एवं पुण्य संचय कर सुख शांति प्राप्त करेंगे। परम्परा से 'विशद ज्ञान' और मोक्ष प्राप्त कर सकेंगे।

ह्न आचार्य विशदसागर

विघ्नहर पार्श्वनाथ विधान करने का फल

1. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा के सामने यह विधान एवं जाप करने से मानसिक असंतुलन की बाधा दूर होगी।
2. जीवन में आने वाली शारीरिक बाधाऐं दूर होंगी।
3. व्यवसाय में आने वाली बाधाऐं दूर होंगी।
4. गृहस्थ जीवन में होने वाले कलह दूर होंगे।
5. यात्रा में आने वाली बाधाऐं दूर होंगी।
6. साधना में आने वाली बाधाऐं दूर होंगी।
7. सन्तानों की प्राप्ति में आने वाले अवरोध दूर होंगे।
8. शिक्षा में आने वाली बाधाऐं दूर होंगी।
9. सेवा नौकरी में आने वाली बाधाऐं दूर होंगी।
10. अपने स्नेहीजनों से मिलने में आने वाला अवरोध दूर होंगे।
11. जीवन सुखमय एवं समृद्ध बनेगा।

(नोटः– रविव्रत के उद्यापन अवसर पर यह पूजन अवश्य करें।)

कालसर्प योग निवारक विधान

संसार दुःखों का समूह है। दुःखों से बचने के लिए प्राणी हमेशा प्रयत्नशील रखता है। यह प्रयत्न कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल होते हैं। अनुकूल अर्थात् सम्यक् प्रयत्न ही दुःख दूर करने में समर्थ होते हैं। दुःखों का अन्तरंग कारण हमारी रागद्वेष रूप परिणति है एवं बाह्य कारण कार्मोदय है। कर्मोदय के अनुसार अनुकूल, प्रतिकूल निमित्त मिलते रहते हैं और जीव दुःख का वेदन करता रहता है। आचार्यों ने दुःखों से बचने के लिए राग–द्वेष के परिणामों से बचने का उपाय श्रेष्ठ कहा है। अतः हम श्रावकों को जिनेन्द्र भगवान की भक्ति करनी चाहिए।

ग्रहों की स्थिति की एक दशा विशेष को काल सर्पयोग कहते हैं जो व्यक्ति को व्यथित करता रहता है। ग्रहों के स्थान (भाव) राशि का संयोग एक ग्रहों की युति एक ऐसा योग बनाते हैं जो ग्रहों की शक्ति को बढ़ा देते हैं। इनमें अशुभ ग्रहों के योग से वह शक्ति नकारात्मक हो जाने के कारण व्यक्ति पर विपरीत प्रभाव डालती है। जिससे वह दुःख अनुभव करता है। इस दुःख से जिनेन्द्र भगवान की भक्ति ही बचा सकती है; क्योंकि भक्ति से अंतरंग के परिणाम सकारात्मक बनते हैं और बाह्य में शान्ति का अनुकूल वातावरण बनता है। इस कार्य के लिये **पूज्य आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज** द्वारा प्रणीत **श्री पार्श्वनाथ भगवान** की आराधना का यह पूजा विधान अत्यन्त उपयोगी है। ग्रहों की प्रतिकूलता के उपशमन के लिए यह विधान कालसर्पयोग वाले व्यक्ति को अपने जन्म नक्षत्र में ही करना चाहिए। क्योंकि जन्म नक्षत्र की शक्ति के साथ हमारी भक्ति की शक्ति अनुकूल सकारात्मक शक्ति का निर्माण कर विपरीत प्रतिकूल नकारात्मकता का समापन होता है।

अतः यह विधान पूर्णभक्ति एवं विधिपूर्वक मांडना बनाकर कलश एवं दीपक स्थापित करके अभिषेक एवं शान्तिधारा करके ही प्रारम्भ करना चाहिए। विधान से संबंधित जाप का अनुष्ठान अवश्य करें। पूजा भक्ति का प्रसाद शिव प्रासाद की आधारशिला होता है।

अतः काल सर्प योग जैसे सामान्य दोष को दूर करने में कोई बाधा ही नहीं है। यह विधान आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पावन भावना से प्रस्तुत हुआ है। अतः इसके करने से विधानकर्त्ता के भावों में भी विशुद्धता आती है। जो दुःख दूर करने का प्रबल हेतु है।

– पं. सनतकुमार विनोदकुमार जैन, रजवांस, जिला–सागर (म.प्र.)

श्री चँवलेश्वर पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थ क्षेत्र (लघु सम्मेदशिखर)

चैनपुरा, माण्डलगढ़, जिला-भीलवाड़ा (राज.)

क्षेत्र का परिचय

मार्ग और अवस्थिति :- राजस्थान के औद्योगिक केन्द्र भीलवाड़ा से 60 कि.मी. दूरी पर स्थित अरावली पर्वत के मध्य स्थित यह क्षेत्र अपनी सु-सौम्यता, प्राकृतिक सौन्दर्य की अनुपम छटा को बिखेर रहा है, जिसका कण-कण पावन/पवित्र है; क्योंकि देवाधिदेव भगवान पार्श्वनाथ के केवलज्ञान के पश्चात् प्रथम समवशरण की रचना यही हुई थी। कंकरीले पर्वत का रास्ता चढ़ने में अतीव आनन्द की अनुभूति देता है। कारण कि इच्छा जागृत है कि देवाधिदेव पार्श्वनाथ के दर्शन करेंगे ये सब चमत्कार है त्रिलोकाधिपति वामानन्दन के।

क्षेत्र का इतिहास :- स्वर्णाक्षरों में लिखा है श्री चँवलेश्वरजी के इतिहास के अवलोकन पर मालूम होता है कि यह क्षेत्र चमत्कारों की खान है, सम्पूर्ण वर्णन लिखना अशक्य है फिर भी धृष्टतावश कुछ लिख रहे हैं। इन्हीं पहाड़ों के आस-पास प्राचीनकाल में दरीबा नामक एक नगर था जो अपनी यौवनदशा में पूर्ण उन्नत एवं सुप्रसिद्ध रहा होगा। जहाँ के खण्डहर आज भी वैभवशाली नगर को याद दिला रहे हैं। इसी नगर में शाह श्यामा सेठ रहते थे और उनके पुत्र सेठ नथमल शाह राजभद्रा, जो उस समय बड़े धर्मात्मा एवं वैभव सम्पन्न थे उनके दो पुत्र हंसराज और वच्छराज थे।

इनकी धेनु प्रतिदिन जंगल में चरने जाती थी। एक बार जब गाय के दुहने पर दूध नहीं निकला और यही क्रम लगातार कई दिनों तक चलता रहा। तब सेठजी को बड़ी चिन्ता हुई और ग्वाले से पूछा, तब ग्वाले ने निश्चय कर लिया कि आज मुझे इस गाय के पीछे दिनभर रहकर इसके दूध का पता लगाना होगा। गोधूलि में जब गायों को लाने का समय हुआ तब क्या देखता है कि वह गाय पहाड़ की चोटी (चूल) पर अपने आप चढ़ गयी।

पहाड़ की चोटी पर खड़ी हुई उस गाय का दूध वहाँ स्वत: झरने लगा तब उसे प्रसन्नता हुई जब ग्वाले का संदेह दूर हुआ। संध्या के समय सेठजी को सारा वृतान्त कह दिया। गाय का दूध क्यों झरता है, इस विचार में सेठजी व्यस्त थे;

लेकिन उसका समाधान उन्हें नहीं सूझ रहा था। रात्रि के पिछले भाग में स्वप्न आया कि जहाँ गाय का दूध झरता है वहाँ भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की सुन्दर प्रतिमा विद्यमान है। अतएव उसे निकालकर वहाँ मन्दिर का निर्माण करवायें। सेठजी चिन्ता से मुक्त हुये, बड़े प्रसन्न एवं अपने को भाग्यशाली समझते हुए प्रात:काल उठे और इस निश्चय को साकार रूप देने के लिए उसी समय दृढ़ संकल्पित हुये। सेठजी ने सर्वप्रथम भगवान की प्रतिमा को जमीन से सावधानीपूर्वक निकलवाई फिर इसी स्थान पर मन्दिर के निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया व शिखरबद्ध मन्दिर बड़ा सुन्दर व आकर्षक बनाया। प्रथम परकोटे के बाहर खुला मैदान व मध्य में मन्दिर है जिसके द्वार में पद्मासन प्रतिमा उकेरी हुई। पूजन मण्डप नौ चौकी के रूप में बना हुआ है। गर्भगृह के द्वार पर मध्य में पद्मासन उकेरी हुई प्रतिमा है और दोनों ओर दिगम्बर जैन खड्गासन प्रतिमाएं अंकित है।

पर्वत पर चढ़ने हेतु 257 सीढ़ियाँ पुन: आधा कि.मी. चलने पर यात्रियों के ठहरने की समुचित धर्मशाला की व्यवस्था है, वहाँ आकर दैनिक क्रिया से निवृत्त होकर पुन: ऊपर की ओर गमन करते हैं जहाँ 50 सीढ़ियाँ चढ़कर भगवान पार्श्वनाथ की प्राचीन मनोहारी प्रतिमा के दर्शन होते हैं।

करीब एक हजार वर्ष पूर्व की प्राचीन प्रतिमा होने से उनके दर्शन से मन रूपी कमल अनायास ही विकसित हो जाता है व मन में आनन्दानुभूति होती है।

प्रतिमा बालू रेत की बनी होकर स्लेटी रंग की सर्पफण वाली अतिशय युक्त है। प्रतिमा की ऊँचाई लगभग 31 इंच की है। प्रतिमा के समीप ही स्तम्भ है, जिसमें पद्मासन व खड्गासन प्रतिमा उकेरी हुई है। मूल मन्दिर के सामने भगवान पार्श्वनाथ की उत्तंग प्रतिमा करीब 5 फीट की विराजमान है, वह भी अपने आप में अनूठी है।

चंवलेश्वर पार्श्वनाथ क्षेत्र का इतिहास 1 मार्च, 1969 में क्षेत्र कमेटी द्वारा प्रकाशित पुस्तक में क्षेत्र की तात्कालिन आवश्यकताओं में लिखा है कि तलहटी के प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार तत्काल होना आवश्यक ही नहीं; अपितु अति अनिवार्य है, किन्तु किन्हीं कारणों से वह पूर्ण नहीं हो सका।

मूर्ति की प्रतिष्ठा :- मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की प्रतिमा बैशाख सुदी 3 वि.सं. 1272 को पंचकल्याणक महोत्सव सहित विराजमान की गई साथ में मूलनायक प्रतिमा के दाहिने भाग की ओर एक चतुर्मुख स्तंभागार श्याम पाषाण की दूसरी ओर मानस्तंभी पीले रंग की प्रतिमा भी विराजमान की गई।

क्षेत्र का आलौकिक दृश्य :– पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य श्री चँवलेश्वर पार्श्वनाथ क्षेत्र का दृश्य मोहक होकर चूल का कण–कण पूज्य है। जिसके पैर चुमती हुई बनास नदी अपने अविरल वेग से प्रवाहित होकर पर्वत का प्रक्षालन कर रही है ऐसी प्राकृतिक छटा से घिरे हुये क्षेत्र की अलौकिक शोभा लिखने में लेखनी भी सक्षम नहीं है। अत: आइये और अचल तीर्थ के दर्शन कर पुण्यार्जन कीजिये जो कि कर्मक्षय हेतु मुक्ति रमा को वरने में सहायक है। क्षेत्र की तलहटी में प्राचीन धर्मशाला है जहाँ पूर्व में अनेक मुनि संघों के वर्षायोग हुए हैं पास ही तपोवन का निर्माण कार्य चल रहा है।

क्षेत्र के वार्षिक मेले :– क्षेत्र पर दो वार्षिक मेलों का आयोजन किया जाता है। प्रथम मेला पौष कृष्णा 9–10 को श्री पार्श्वनाथ भगवान के जन्म कल्याणक की पूर्व संध्या पर विविध धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों के साथ मनाया जाता है। जिसमें हजारों दर्शनार्थी हर्षोउल्लास से सम्मिलित होकर कड़ाके की सर्दी में भी अपनी धार्मिक श्रद्धा व्यक्त करते हैं। यह दृश्य मनोज्ञ एवं आकर्षक होता है।

क्षेत्र पर दूसरा मेला आसोज कृष्णा 2 को लगता है। उस अवसर पर हजारों जन आकर दिन में पूजा–पाठ, भजन–कीर्तन करते है, क्षेत्र पर पूजा–विधान का आयोजन किया जाता है। उसके पश्चात् देवाधिदेव का महाभिषेक का पुण्यार्जन कार्य सम्पन्न होता है। उसी दिन दिगम्बर समाज के सभी साधर्मी बन्धु जैन संस्कृति के महापर्व क्षमावणी का आयोजन भी करते हैं। वर्ष भर में की गई गलतियों के लिए मन–वचन–काय से सामूहिक क्षमायाचना करते है।

क्षेत्र का तीसरा मेला तलहटी मंदिर में पञ्चकल्याणक की वर्षगाँठ एवं जिनबिम्ब स्थापना दिवस फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को महामस्तकाभिषेक एवं पूजा विधान पूर्वक सम्पन्न होता है।

तलहटी का मंदिर :– क्षेत्रीय पर्वत की सीढ़ियों के सामने ऊँचे स्थान पर एक मन्दिर बना हुआ था जिसमें विशाल पद्मासन भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की प्रातिहार्ययुक्त प्रतिमा है। इसे भी सेठ नथमलजी ने अपनी काकीजी (धर्मपत्नी सेठ हमीरमलजी) के दर्शनार्थ बनवाया था चूंकि वृद्धावस्था के कारण उनसे पहाड़ पर दर्शनार्थ जाने में विवशता थी। मूलनायक प्रतिमा जिनकी प्रतिष्ठा माघ सुदी 5मीं वि.सं. 1278 में, अतिरिक्त अन्य प्रतिमा भी थीं। ये सब खंडित हो गई थी। यह मन्दिर जीर्ण–शीर्ण अवस्था में होता गया और ध्वस्त हो गया था।

ब्र. गेबीलालजी ने अपनी यात्रा में इनका पूरा विवरण दिया है । लेकिन अब मूलनायक प्रतिमा के अतिरिक्त अन्य प्रतिमायें यहाँ नहीं हैं ऐसा मालूम होता है कि वे

अन्यत्र पुरातत्व विभाग में चली गई होगी। अभी भी यह प्रांगण नक्टी काकीजी का मन्दिर के नाम से पुकारा जाता है। जीर्ण–शीर्ण मूलनायक प्रतिमा अभी भी दर्शनीय बनी हुई है। द्वार के बाजू में लगभग सवा पाँच फुट क्षेत्रपाल बाबा की खड्गाशन मूर्ति है।

परम पूज्य तीर्थ जिर्णोद्धारक, क्षमामूर्ति साहित्य रत्नाकर, पञ्चकल्याणक प्रभावक **आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज वर्षायोग–2009** हेतु मालपुरा से विहार कर भीलवाड़ा जाने के पूर्व चंवलेश्वर पहुँच रहे थे। साथी मुनि विशालसागरजी एवं क्षुल्लक विदर्शसागरजी पीछे रह गये तब साथ वालों ने आग्रह किया आचार्यश्री मुनिराजजी आते हैं तब तक यहीं विश्राम कर लें सामने स्थान था लोग बोले बालाजी का स्थान है वहीं बैठते हैं। वहाँ जाकर देखा तो पास ही पार्श्वनाथ भगवान की भव्य प्राचीन मूर्ति धूप और वर्षा की भेंट चढ़ रही है लोगों ने खण्डित मानकर छोड़ दिया था एवं मन्दिर ध्वस्थ हो चुका था जिसका नाम निशान भी मिट चुका था मूर्ति की भव्यता देखकर आचार्यश्री के मन में पीड़ा हुई।

आचार्यश्री ने लोगों से मन्दिर जीर्णोद्धार की चर्चा की तो मीटिंग करेंगे यह कहकर बात समाप्त कर दी; किन्तु आँखों में मूर्ति की भव्यता बार–बार झलक रही थी कोटड़ी पहुँचने पर लोग दर्शन करने आये तब पुन: मूर्ति की चर्चा हुई, वह बोले– यदि आपका आशीर्वाद मिले तो सबकुछ हो सकता है। तब आचार्यश्री ने आशीर्वाद देकर कहा आप इस कार्य को करो हमसे जो सहयोग बनेगा अवश्य ही पूर्ण करेंगे। 5 अगस्त रक्षाबन्धन पर्व पर चर्चा हुई मन्दिर निर्माण कर चौबीसी विराजमान होना चाहिए और सभा में प्रस्ताव रखा तो उस दिन 7–8 मूर्ति स्थापनकर्ताओं के नाम प्राप्त हो गये और लोगों ने आगे बढ़कर सहयोग देने की भावना रखी अनेक विघ्न बाधाएँ आती रहीं फिर भी भगवान पार्श्वनाथ की कृपा से सब दूर होती रहीं और आज वहाँ मन्दिर का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है तथा जिन भगवान का जो रंग है उसी रंग में 24 तीर्थंकर की मूर्तियाँ बनकर तैयार हैं जिनका पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा दिनांक 7 मार्च, 2011 से 12 मार्च, 2011 तक परम **पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागरजी एवं आचार्यश्री विशदसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य** में हुआ तथा यह मंदिर पार्श्वनाथ चौबीसी जिनालय के रूप में जाना जायेगा।

पास ही लोग जिन्हें बालाजी कहकर पुकारते हैं वह क्षेत्रपाल हैं। जिनको आसपास के लोगों ने कुछ सुरक्षा देकर यथा स्थान बनाए रखा।

क्षेत्र के चमत्कार :–

तीर्थ बहुत ही चमत्कारिक है और क्षेत्रपाल भी रक्षक देव के रूप में वहाँ रहे अनेक बार लोगों ने मूर्ति को ले जाने की कोशिश की किन्तु क्षेत्रपाल की सुरक्षा के आगे किसी की हिम्मत नहीं हुई और जब निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ तब नागदेव स्वयं आकर मन्दिर में विराजमान हुए तब काम कर रहे कैलाशजी पारौली ने पूछा महाराज क्या करें काम रूक रहा नागदेव को देखकर लोग भाग रहे हैं। तब महाराज ने कहाह्न भगवान के सामने श्री फल भेंट कर निवेदन कर लीजिए और क्षेत्रपाल को भेंट देकर निवेदन कर लीजिए सब ठीक हो जायेगा। ऐसा करते ही नागराज वहाँ से चले गये और आज तक नहीं आये। हम तो कहते कि सच्चे मन से जो व्यक्ति पार्श्वप्रभु के चरणों में श्रीफल चढ़ाकर दीपक जलाता है उसकी मनोकामना अवश्य ही पूर्ण होती है तथा यहाँ क्षेत्र पर आने वाले भक्त अगर जंगल में रास्ता भूलने लग जाते हैं तो श्वान (कुत्ता) यहाँ उनको ऊपर क्षेत्र तक लाकर छोड़ता देखा गया है। यह प्रकाशचंदजी जैन (जयपुर) की बताई स्वयं की घटना है। अतिशय क्षेत्र पर अनेक यात्री अपनी मनोकामना पूर्ण करते है। ग्रहारिष्ट से पीड़ित जन–जीवन में शांति प्राप्त कर सकें इस हेतु नवग्रहारिष्ट निवारक नव जिनेन्द्र की मूर्तियाँ स्थापित करने का प्रस्ताव है। सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते ही रोड के किनारे अति प्राचीन छतरी हैं। उसमें चतुर्मुख (सर्वतोभद्र) श्रीजी विराजमान हैं।

क्षेत्र जीवनदान ध्रुव फण्ड योजना

परम संरक्षक	**–**	**101, 001.00/– रुपये**
संरक्षक	**–**	**51, 001.00/– रुपये**
सह संरक्षक	**–**	**21, 001.00/– रुपये**
सदस्य	**–**	**11, 001.00/– रुपये**
नव निर्माण सदस्यता	**–**	**25, 001.00/– रुपये**
संरक्षक सदस्यता	**–**	**101, 001.00/– रुपये**
संरक्षक ज्योति	**–**	**31,001.00/– रुपये**
पूजा फण्ड	**–**	**1, 001.00/– रुपये**
आजीवन पूजन संरक्षक	**–**	**5,101.00/– रुपये**
ज्योति फण्ड	**–**	**501.00/– रुपये**

आगामी योजनाएँ (तलहटी मंदिर हेतु)

1.	**मंदिर जीर्णोद्धार निर्माण हेतु**	**311001/– रुपये**
2.	**शिखर निर्माण हेतु**	**151001/– रुपये**
3.	**लघु शिखर निर्माण हेतु (24)**	**31001/– रुपये**
4.	**बरामदा के 3 खण्ड हेतु प्रति**	**100001/– रुपये**
5.	**नवग्रह निवारक 9 मूर्तियाँ हेतु**	**20001/– रुपये**
6.	**सीड़ियाँ (81)**	**3535/– रुपये**
7.	**छतरी निर्माण हेतु**	**51001/– रुपये**
8.	**मंदिर का मूल द्वार**	**71001/– रुपये**
9.	**कमरा निर्माण हेतु**	**51001/– रुपये**
10.	**दीवार में पत्थर हेतु**	**100001/– रुपये**
11.	**दीवार पर POP कार्य हेतु (4)**	**15001/– रुपये**
12.	**पार्श्व उद्यान**	**प्रतिवृक्ष 5001/– रुपये**
13.	**मंदिर निर्माण में मार्बल लगाने हेतु**	**51000/– रुपये**
14.	**उद्यान में R.C.C. कुर्सी**	**एक कुर्सी 11001/– रुपये**
15.	**डीलक्स रूम**	**100001/– रुपये**
16.	**मार्ग उद्यान हेतु**	**प्रत्येक 10 फुट के लिए 3101/– रुपये**

नोटः– 11001/– रुपये से अधिक राशि सहयोग करने वालों के नाम शिला पर अंकित किये जायेंगे।

क्षेत्र समवशरण की रचना की जा रही है जिसमें योगदान दे सकते है :–

4 मूर्ति – 51001/– रु.,	**4 मानस्तम्भ–31001/– रु.**
समवशरण की 8 भूमि– 15001/– रु.	**गंधकुटी 3 खण्ड– 21001/– रु.**
कल्पवृक्ष–25001/– रु.	**लघु उपकरण– 3101/– रु.**
द्वार 4 प्रति–35001/– रु.	**चक्रधर 4 प्रति–11001/– रु.**
मानस्तम्भ में प्रति मूर्ति–11001/– रु.	**मंदिर निर्माण–111001/– रु.**
शिखर निर्माण–111001/– रु.	**मार्बल हेतु– 51001/– रुपये**

एवं समवशरण निर्माण हेतु अधिकाधिक सहयोग प्रदान करें।

अभिषेक पाठ भाषा

आचार्य विशदसागरजी

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार।
स्याद्वाद के नायक अनुपम, अनन्त चतुष्टय अतिशयकार।।
मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजन।
पुण्य प्रदायक सद्दृष्टि को, करने वाली कर्म शमन।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भू: स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री मत् मेरू के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन।
मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन।।
मैं हूँ इन्द्र प्रतिज्ञा का शुभ, धारण करके आभूषण।
यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण।।2।।

ॐ ह्रीं नमो परमशान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय स्वरूपं यज्ञोपवीत धारयामि।

हे विबुधेश्वर ! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब।
चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव को प्रारम्भ।।
स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन।
गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण।।3।।

ॐ ह्रीं परम पवित्राय नम: नवांगेषु चंदनानुलेपनं करोमि।

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव।
बुद्धी शाली दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव।।
मैं समक्ष उनके शुभ अनुपम, करने हेतु संरक्षण।
स्नपन भूमि का करता हूँ, अमृत जल से प्रच्छालन।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर।
हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर।।
जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रच्छालन करता कई बार।
हुआ उपस्थित उसी पीठ को, प्रच्छालित मैं करूँ सम्हार।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्र: नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ–प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार।
विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार।।
स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार।
श्री जिनेन्द्र के भद्रपीठ पर लिखता हूँ मैं अपरम्पार।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमिं स्वाहा।

गिरि सुमेर के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान।
श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान्।।
कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन।
अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णै प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

(चौकी पर चारों दिशा में चार कलश स्थापित करें।)

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महति महान्।
स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरू, रांगा निर्मित कलश महान्।।
चार कलश चारों कोणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर।
ऐसा मान करूँ स्थापन, भक्ति से मैं अभ्यन्तर।।

ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतु: कोणेषु चतु: कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(जल से अभिषेक करें)

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाल।
मुकुट मणि में लगे रत्न की, किरणच्छवि से धूसर लाल।।
जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान।
भक्ति सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

(चार कलश से अभिषेक करें)

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, उनकी शोभा धारे जीव।
पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव।।
भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी।
करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी।।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे .... देशे ... नाम नगरे एतद् ... जिनचैत्यालये वीर नि. सं. ... मासोत्तममासे ... मासे ... पक्षे ... तिथौ ... वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनिआर्यिका-श्रावक-श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

(सुगंधित कलशाभिषेक करें)

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार।
चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार।।
चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धी वान।
तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर पूर्णसुगंधितकलशाभिषेकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री परम देवाय श्री अर्हत् परमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

लघु शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते, श्री पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनंत संसार चक्र परिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनंत ज्ञानाय, अनंत वीर्याय, अनंत सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्य वशंकराय, सत्य ज्ञानाय, सत्य ब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मंडल मंडिताय, ऋष्यार्यिका श्रावक श्राविका प्रमुख चतुरसंघोपसर्ग विनाशनाय, घाति कर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय। **अपवायं अस्माकं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **मृत्युं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **रति कामं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **क्रोधं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **अग्नि भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वशत्रु भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वोपसर्गं** छिंद छिंद भिंद भिदं। **सर्वविघ्नं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राजभयं**

छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व चोर भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व दुष्ट भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मृग भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वात्मचक्रभयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व परमत्रं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व शूल रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्षय रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कुष्ठ रोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व क्रूररोगं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व नरमारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गज मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वाश्व मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गो मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व महिष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व धान्य मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वृक्ष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व गुल्म मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्वपत्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व पुष्प मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व फल मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व राष्ट्र मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व देश मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व विष मारिं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व बेताल शाकिनी भयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व वेदनीयं** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व मोहनीय** छिंद छिंद भिंद भिंद। **सर्व कर्माष्टकं** छिंद छिंद भिंद भिंद।

ॐ सुदर्शन महाराज मम चक्र विक्रम तेजो बल शौर्य वीर्य शांतिं कुरु कुरु। **सर्व जनानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व भव्यानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व गोकुलानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मंटब पत्तन द्रोणमुख संवाहनंदनं** कुरु कुरु। **सर्व लोकानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व देशानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व यजमानानंदनं** कुरु कुरु। **सर्व दुख हन हन दह दह पच पच कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं।**

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितं।
अभयं क्षेम आरोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

श्री शांति मस्तु। ... कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चंद्रप्रभु वासुपूज्य-मल्लि-वर्धमान पुष्पदंत-शीतल मुनिसुव्रत-स्तनेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।

(इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गन्धोदक धारा वर्षणम्)

शांति मंत्रह्हॐ नमोर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छ्रद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां ।
शांतिः निरन्तर तपोभव भावितानां ।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां ।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां ।।

संपूजकांनां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां ।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः ।।

अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं।।

अर्घह्लह्ल उदक चन्दन..... जिन-नाथ-महं यजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

विनय पाठ

रचयिता : प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान् ।।
दुःखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।
निर्मल भावों से प्रभु, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार।।

करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभु ! करते स्वयं समान।।
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव ।
जब तक मम जीवन रहें, ध्याऊँ तुम्हें सदैव।।
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ति धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते विशद प्रणाम।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धि सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु

अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन।।
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध।।
श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभु जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल।।
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम।।
अरहंतों की शरण को पाऊँ, सिद्ध शरण में मैं जाऊँ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाऊँ।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे।।
भाई बीज पुण्य का बोवे। ...
अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्यंभ्तर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें।।
भाई जीवन सफल बनावें। ...
अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
भाई बनो पुण्य की राशी। ...
पञ्च नमस्कार यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।

भाई बनो सदा विश्वासी। ...
परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया।।
भाई गुण गाके हर्षाया। ...
मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी।।
भाई आतम ज्ञान प्रकाशी।। ...
विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें।।
जिनेश्वर की शरण जो आवें।। ...

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह के कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक हैं।।
मूल संघ में सम्यक् दृष्टि, पुरूषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान।।1।।
जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरू के, लिए विशद होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान।।
केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हो भगवान।।2।।
विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान।।
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ति द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान।।3।।
परम भाव शुद्धि पाने का, अभिलाषी होकर मैं नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धि भी रखकर के साथ।।
जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादि का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादि की, करता हूँ पूजन अर्चन।।4।।
हे अर्हन्त ! पुराण पुरूष हे !, हे पुरूषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादि द्रव्यों का शुभ, पाया मैंने आलम्बन।।
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नि में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करूँ हवन।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश।।

श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश।
श्री सुविधि मंगल करें, शीतल नाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश।।
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश।।
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।
श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश।।
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(छन्द ताटंक)

महत् अचल अद्भुत अविनाशी, केवल ज्ञानी संत महान्।
शुभ दैदीप्यमान मनः पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान।।
दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पांञ्जलिं क्षिपेण करना चाहिये।)

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान्।
शुभ संश्रोतृ पादानुसारिणी, चउ विधि बुद्धि ऋद्धीवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धी धारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।2।।
श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन।।
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।3।।
प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी।।

शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।4।।
जंघा अग्नि शिखा श्रेणि फल, जल तन्तु हों पुष्प महान।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।5।।
अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।6।।
जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आप्ती, ऋद्धी पाते हैं गुणवान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।7।।
दीप्त तप्त अरू महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारी, करते मन को भाव विभोर।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।8।।
आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धि, आशीर्विष दृष्टि विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धि, विडौषधि मल्लौषधि जान।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।9।।
क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्।।
शक्ति तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषि करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।10।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्) इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन (समुच्चय)

स्थापना

देवशास्त्र गुरु के चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय, सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में बस एक सहारा है।।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र अत्र अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! शरण में आये हैं, भव के सन्ताप सताए हैं।
हम परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधि प्रदान करो।
हम अक्षत लाए श्री चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
हम काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले लाए।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह काम बाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट कभी न कर पाये।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।
अब विशद मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।
देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरुभ्यो:कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थं अनन्त।।

(छन्द तोटक)

जय अरि नाशक अरिहंत जिनं, श्री जिनवर छियालीस मूल गुणं।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं।।
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं।।1।।

जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं।।
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भवन व्यन्तर ज्योतिषेव।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव।।2।।

श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी।।

है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।
जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल।।3।।

जय रत्नत्रय युत गुरूवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं।
जय गुप्ति समिति शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं।।
गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग-जन के उपकारी हो।
गुरु आतम ब्रह्म विहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो।।4।।

जय सर्व कर्म विध्वंस करं, जय सिद्ध शिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो-कर्महनं।।
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं।।5।।

जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदि ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं।।
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द्र सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें।।6।।

जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी।।
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनका यश मंगल गावत हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो: कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

तीन लोक तिहूँ काल के, नमूं सर्व अरहंत।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरू जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल।।

पुष्पांजलि क्षिपेत्

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन्!
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् ! हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्!
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
मेरा अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पचिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई ।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...

दोहा– नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्–शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद :

श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिन पूजन

स्थापना

हे पार्श्वप्रभु ! करुणा निधान, हे भव्यो के करुणाकारी।
तुम चंवलेश्वर में प्रकट हुए, शुभ सपना देकर त्रिपुरारी।।
कई भव्य जीव तव चरणों में, बहु दूर–दूर से आते हैं।
आह्वानन करते निज उर में, चरणों में शीश झुकाते हैं।।
हे नाथ ! हृदय में आ जाओ, हम यही भावना भाते हैं।
हे प्रभु ! आपके चरणों की हम महिमा अनुपम गाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतर अवतर संवोषट् इत्याह्राननम्। ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छन्द)

महामोह मिथ्यात्व नाश कर, करें आत्म का उद्धार।
जन्मादि त्रय रोग रहें ना, सुपद प्राप्त होवे अविकार।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चन्दन परम सुगन्धित, जिसकी महिमा अपरम्पार।
भवाताप हो नाश हमारा, पा जाएँ शिवपद शुभकार।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम अक्षत यह पावन, अक्षयकारी मंगलकार।
अक्षय पद की प्राप्ति हेतु हम, अर्पित करते बारम्बार।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध भाव के पुष्प सुकोमल, परम सुगन्धित हैं मनहार।
काम रोग नश महाशील गुण, का हम पा जाएँ उपहार।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

हो विभाव का नाश हमारा, शुभ भावों का करें विकास।
क्षुधा रोग का नाश शीघ्र कर, सिद्ध शिला पर करें निवास।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् ज्ञान के दीप जलाकर, निज के गुण का करें प्रकाश।
पद पाएँ अविनाशी अविचल, मोह तिमिर का करके नाश।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म की धूप बनाकर, खेते अग्नि के मझधार।
हमे सताया जिन कर्मों ने, होवे अब उनका संहार।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञान के श्रेष्ठ तरू से, फल यह लाए अतिशयकार।
पाने मोक्ष महाफल हम भी, आये हैं जिन प्रभु के द्वार।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन ज्ञानाचरण तपोमय, आराधन खोले शिव द्वार।
पद अनर्घ अविलम्ब प्राप्त हो, हो स्वरूप मेरा शिवकार।।
चंवलेश्वर शुभ तीर्थ मनोहर, महिमा जिसकी रही महान।
भाव सहित पूजा करने से, होता भव्यों का कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा दे रहे, चरणों में धर ध्यान।
भाव सहित हम कर रहे, जिनवर का गुणगान।।
शान्तये शांतिधारा.....

पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, ले हाथों में पुष्प।
करने को अपने विशद, कर्म सभी निर्मूल।।
पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा– **थाल भरा वसुद्रव्य का, दीपक लिया प्रजाल।**
चंवलेश्वर के पार्श्व की, गाते हम जयमाल।।

(तामरस छन्द)

चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते।।1।।
श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत नमस्ते।।2।।
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते।।3।।
शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते।।4।।

धर्म धुराधर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करुणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम् माथ नमस्ते।।5।।
जन-जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते।।6।।
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नत्रय युक्त नमस्ते।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते।।7।।
वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।
जित् उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित सत् इन्द्र नमस्ते।।8।।
पार्श्वनाथ भगवान नमस्ते, चंवलेश्वर स्थान नमस्ते।
चौबीसों भगवान नमस्ते, पार्श्व तलहटी धाम नमस्ते।।9।।

दोहा- **भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।**
सुख सम्पति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **चरण शरण के भक्त की, भक्ति फले अविराम।**
मुक्ति पाने के लिए, करते विशद प्रणाम्।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

तलहटी स्थित पार्श्वनाथ जिन पूजा

स्थापना

चंवलेश्वर गिरि तीर्थराज में, रही तलहटी अपरम्पार।
पार्श्वनाथजी जहाँ विराजे, अतिशय कारी मंगलकार।।
नाटी काकी का मंदिर शुभ, चारों ओर रहा विख्यात।
जीर्णोद्धार कराया आके, विशद सिन्धु ने आ पश्चात।।
तीन लोक में पूज्य पार्श्व प्रभु, का हम करते आह्वानन।
उनके चरण कमल में करते, श्रद्धा सहित परम अर्चन।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

हे पार्श्व प्रभु तव ज्ञान गंग से, समकित जल पाने आए।
मिथ्या मृगतृष्णा में भटके, हम भवसागर में भरमाए।।
अब जन्म जरा के नाश हेतु, प्रभु नीर चढ़ाने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम झुलस रहे भव तापों में, हमने अतिशय कई दुःख पाए।
सम शीतलता पाने अनुपम, प्रभु चरण-शरण में हम आए।।
हम भवाताप के नाश हेतु, यह शीतल चन्दन लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिक्षण नश्वर पर्यायों में, हम भूल गये निज के पद को।
उपसर्ग जयी हे पार्श्व प्रभु, अब दिखला दो मुक्तिपथ को।।
अक्षय अक्षत यह श्रेष्ठ प्रभु, हम पूजा करने लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

है कामदेव का वाण महा, उससे बचना मुश्किल होता।
प्रभु पार्श्वनाथ के आगे वह, अपनी सारी शक्ति खोता।।
हम कामवाण के शमन हेतु, यह पुष्प मनोहर लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धातम की महिमा हमने, अब तक प्रभु जान न पाई है।
परद्रव्यों द्वारा आत्म तत्त्व की, भूख मिटाना चाही है।।
अब क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, नैवेद्य बनाकर लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम भटक रहे हैं सदियों से, प्रभु मोह महातम नाश करो।
अब दूर करो अज्ञान हमारा, मन मंदिर में वास करो।।
प्रभु मोह-तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ध्यान अग्नि में संयम युत, हम धूप जलाने लाए हैं।
इन्द्रिय मन को वश में करके, शुभ ध्यान लगाने आए हैं।।
अब अष्ट कर्म विध्वंस हेतु, यह धूप बनाकर लाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के फल से पीड़ित हो, अब मुक्ति फल पाने आये।
जिन सिद्ध सुपद पाने हेतु, हमने जिनवर के गुण गाये।।
हम मोक्ष महाफल प्राप्त करें, प्रभु भाव बनाकर आये हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे परमानन्द सुखामृत धारी, गुण अनन्त के अनुपम कोष।
तुम चिदानन्द चैतन्य स्वरूपी, नित्य निरंजन हो निर्दोष।।
हम निज अनर्घपद प्राप्त करें, प्रभु अर्घ्य बनाकर लाये हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में, सौभाग्य जगाने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– ले बनास का नीर हम, देते जल की धार।
शांति धारा दे रहे, पाने शांति अपार।। *शांतये शांतिधारा...*

दोहा– पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पुष्प लिए शुभ हाथ।
पार्श्व प्रभु के चरण में, झुका रहे हम माथ।। *पुष्पाञ्जलि क्षिपामि*

जयमाला

दोहा– चँवलेश्वर गिरि के तले, पार्श्वनाथ भगवान।
जयमाला गाके यहाँ, करते हम गुणगान।।

(पद्धडि छन्द)

शुभ जम्बूद्वीप अतिशय महान, है भरत क्षेत्र जिसमें प्रधान।
शुभ राजस्थान जिसमें प्रदेश, है जिसके मध्य मेवाड़ देश।।
है जिला भीलवाड़ा महान, शुभ पोस्ट राजगढ़ है प्रधान।
इक चैनपुरा है जहाँ ग्राम, तहँ चँवलेश्वर है तीर्थ धाम।।

शुभ तीर्थराज के पास जान, शुभ बनी तलहटी है महान।
बारह सौ अठत्तर श्रेष्ठ जान, विक्रम की संवत् रही मान।।
एक सेठ रहा नथमल प्रधान, नाटी काकी जिसकी सुजान।
गिरि पर जिससे चढ़ा न जाए, मन में दर्शन बिन खेद पाय।।
मंदिर बनवाया था महान, पारस प्रभु का अतिशय प्रधान।
नथमल श्रेष्ठी ने शुभाकार, पारस प्रभु बैठे जिस मझार।।
यहाँ पास बहे सरिता बनास, जहाँ होती सबकी पूर्ण आस।
यहाँ यात्री आते हैं अपार, करके वह आते नदी पार।।
शुभ समवशरण में पार्श्वनाथ, मुनि गणधरादि थे सभी साथ।
आया था कहते सभी लोग, शुभ दिव्य ध्वनि का मिला योग।।
यह क्षेत्र रहा अतिशय विशाल, मन्दिर के बाजू क्षेत्रपाल।
जो अतिशयकारी है महान, हो मनोकामना पूर्ण आन।।
तिथि अश्विन कृष्णा दोज मान, शुभ क्षमा पर्व होवे महान।
यहाँ पौष वदी दशमी सुजान, शुभ मेला होता है प्रधान।।
अभिषेक होय प्रभु का महान, सब श्रावक करते नृत्यगान।
जिनमंदिर मूर्ति काल पाय, हो गया ध्वस्त न कोई जाय।।
आचार्य विशद सागर ससंघ, दर्शन को आये भर उमंग।
मूर्ति को देखा इस प्रकार, मन हुआ गुरु का क्षार–क्षार।।
मन्दिर का जीर्णोद्धार होय, आगे आया न वहाँ कोय।
गुरु किए कोटडी में प्रवेश, कैलाश दोय पहुँचे विशेष।।
मन्दिर की चर्चा किए लोग, तब जीर्णोद्धार का बना योग।
निर्माण में आये कई विघ्न, वह गुरु–कृपा से हुए छिन्न।।
सन् दो हजार ग्यारह महान, शुभ सात से बारह मार्च जान।
करके कल्याणक फिर यथेष्ठ, चौबीसी जिन पधराए श्रेष्ठ।।
उनके चरणों करते प्रणाम, हम भी पा जाएँ मोक्ष धाम।
यह श्रेष्ठ बना मन्दिर विशाल, हैं द्वार प्रभु के रक्षपाल।।
देखे सपना जो सभी लोग, वह पूर्ण हुआ गुरु के सुयोग।
नभ में जब तक हो रवि वास, प्रभु का फैले नूतन प्रकाश।।
हम मान रहे गुरु का आभार, गुरु का दर्शन हो बार–बार।
अगहन कृष्णा एकम सुजान, पच्चिस सौ सैंतिस है निर्वाण।।

लघु धी से भक्ति किए आन, गुण ग्रहण करो ज्ञानी महान।
जब तक न पाएँ मुक्ति वास, तब तक चरणों में रहे बास।।

दोहा– पार्श्व प्रभु के दर्श का, हो सपना साकार।
विशद चरण पद वन्दना, करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं चँवलेश्वर तलहटी स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चँवलेश्वर गिर के तथा, नीचे पारस नाथ।
करके प्रभु की वन्दना, चरण झुकाते नाथ।।

इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

श्री सर्वतोभद्र जिनालय पूजा

स्थापना

विशद सर्वतोभद्र जिनालय, चँवलेश्वर में अपरम्पार।
चतुर्दिशा जिनबिम्ब विराजे, जिनपद वन्दन बारम्बार।।
हृदय कमल में जिनबिम्बों का, करते हैं हम आह्वानन।
सुरभित पुष्प समर्पित करके, करते हैं शत–शत वंदन।।
रहे हृदय में वास हमारे, विशद भावना भाते नाथ।
तव चरणों में मनोयोग से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्र श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं, अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

जिनालय है मंगलकारी, श्री सर्वतोभद्र जिनालय पूजो शुभकारी।
भव की तृषा मिटाना मुश्किल, है अति दुःखकारी, निर्मल नीर गरम कर लाए, हम मिथ्याहारी।।
जिनालय है मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्र श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद वन्दन को चन्दन लाए, सुरभित शुभकारी।
भव संताप मिटाने आए, होकर अविकारी।। जिनालय है मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्र श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शिव नायक शिव दायक जिन हैं, शुभ अतिशयकारी।
अक्षयपद दायक अक्षत यह, लाए अविकारी।। जिनालय है मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्र श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम दाह भारी दुःखदायक, पाते नर–नारी।
पुष्प समर्पित करने लाए, शुभ मंगलकारी।। जिनालय है मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्र श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा वेदना सारे जग में, है पीड़ाकारी।
ताजे शुभ नैवेद्य बनाकर, लाए मनहारी।। जिनालय है मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्र श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महातम तीन लोक में, है मिथ्याकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, यह भव तमहारी।। जिनालय है मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्र श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म शत्रु चेतन के, हैं अतिशयकारी।
धूप जलाते नाश हेतु यह, सुरभित मनहारी।। जिनालय है मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्र श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष महाफल पाया तुमने, शिवपद के धारी।
फल अर्पित करते तव, चरणों अब मेरी बारी।। जिनालय है मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्र श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु विध अर्घ्य समर्पित तव पद, वसु गुण के धारी।
अर्घ्य चढ़ाते यह सर्वोत्तम, पद अनर्घकारी।। जिनालय है मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्र श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांति धारा दे रहे, भव की शांति हेत।
पार्श्व प्रभु के पद युगल, भक्ति भाव समेत।।*शांतये शांतिधारा...*

दोहा– पुष्पों से पुष्पाञ्जलि, देते हम शुभकार।
भव की बाधा शांत कर, पाने मुक्ति द्वार।। *पुष्पाञ्जलि क्षिपामि*

जयमाला

दोहा– श्री सर्वतो भद्र जिन, का करते गुणगान।
जयमाला गाते विशद, करने निज कल्याण।।

(छन्द तोटक)

जिनबिम्ब सर्वतो भद्र अहा, शुभ समवशरण प्रतिरूप रहा।
जो भव सिन्धु का सेतु कहा, फल पाया जिसने जोय चहा।।1।।

भवि तारक दोष निवारक है, विपरीत विभाव विदारक है।
निर आश्रय आश्रव बान रहा, जिनबिम्ब..... ।।2 ।।
भव तारण तरण जहाज सही, निज द्रव्य सुगुण पर्याय रही।
दुःख कारक द्वेष निवार कहा, जिनबिम्ब..... ।।3 ।।
समयामृत पूरित देव कहे, परकृत उपसर्ग न लेश रहे।
अविनाशी हैं जिनदेव महा, जिनबिम्ब..... ।।4 ।।
जिन चरण शरण अघ हारक हैं, जन्मादि रोग निवारक हैं।
भव तारक श्री जिनदेव लहा, जिनबिम्ब..... ।।5 ।।
भव वास त्रास अघनाशक हो, निज चेतन ज्ञान प्रकाशक हो।
फलदायक जो जन जोय चहा, जिनबिम्ब..... ।।6 ।।
श्री जिनवर अतिशय वान रहे, जो गुण अनन्त के कोष कहे।
जिनवर को केवल ज्ञान रहा, जिनबिम्ब..... ।।7 ।।
जिनदास के त्रास निवारक हैं, प्रभु वीतरागता धारक हैं।
जिन मुखतें आगम स्रोत बहा, जिनबिम्ब..... ।।8 ।।
जिनवर दर्शन के लायक हैं, शुभ सम्यक् दर्श प्रदायक हैं।
जिनने क्षायक शुभ दर्श लहा, जिनबिम्ब..... ।।9 ।।
जिन ज्ञान उपाए क्षायक हैं, अतएव भक्ति के लायक हैं।
तुम शरणागत को शरण महा, जिनबिम्ब..... ।।10 ।।
जिन 'विशद' ज्ञान प्रगटायक हैं, शुभ मुक्ति पथ के नायक हैं।
तव शिवपुर में शुभ वास रहा, जिनबिम्ब..... ।।11 ।।

(छन्द – घत्तानन्द)

श्री सर्वतो भद्र जिन, का करते गुणगान।
जयमाला गाते विशद, करने निज कल्याण।।

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्र श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– आप स्वयं कल्याण मय, करते पर कल्याण।
'विशद' भाव से भक्त जन, करते तव गुणगान।।

इत्याशीर्वादः

श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी जिन पाँच का, जपूँ निरन्तर नाम।
चंवलेश्वर में पार्श्व जिन, के पद करूँ प्रणाम।।

चौपाई

जय–जय पार्श्वनाथ शिवकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामादेवी गाए।।
जिनके गृह में जन्मे स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।
देवों ने तब रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।
पञ्चाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।
तपसी क्यों तुम आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।
नाग युगल जलते है कारे, मरने वालें हैं बैचारे।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
सर्प देख तपसी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।
नाग युगल मृत्यु को पाए, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, कमठ नाम था जिसने पाया।।
प्रभु बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।
इक दिन कमठ वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।।
धरणेन्द्र पद्मावती आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभुजी को बैठाया।।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का क्षत्र लगाया भाई।
प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र बनाया।।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।
शहर दरीवा यहाँ बखाना, सात कोष जिसका पैमाना।।
श्यामा सेठ जहाँ के वासी, राज भद्र गोत्री विश्वासी।
नथमल जिनका पुत्र बताया, पूरणमल ग्वाला कहलाया।।

गैया ने जब दूध झराया, सेठ को ग्वाले ने बतलाया।
सेठ के मन में अचरज आया, प्रातः सपना उसे दिखाया।।
यहाँ श्रेष्ठ जिनबिम्ब समाया, उसने लोगों को बतलाया।
धीरे-धीरे खोदा भाई, उसमें अनुपम मूर्ति पाई।।
फण से युक्त मूर्ति शुभ जानो, प्रातिहार्य युत अनुपम मानो।
चैनपुरा एक ग्राम बताया, भीलवाड़ा शुभ जिला कहाया।।
काली घाटी वहाँ बताई, अतिशय मनमोहक है भाई।
राजस्थान प्रान्त शुभ गाया, उसका भी मेवाड़ बताया।।
मंदिर का निर्माण कराया, जिसमें प्रतिमा को तिष्ठाया।
हुआ पञ्च कल्याणक भाई, दूर-दूर से जनता आई।।
दशमी शुभ वैशाख कहाई, सम्वत् सहसेक सप्त बताई।
नदी बनास के तट पर भाई, अतिरमणीक क्षेत्र सुखदाई।।
देवों से जो पूज्य कहाए, चमत्कार कई श्रेष्ठ दिखाए।
सेठ की नाटी काकी जानो, अतिवृद्ध जिसको पहिचानो।।
जो पर्वत पर चढ़ न पाई, नीचे मंदिर हो शुभ भाई।
हम भी जिन के दर्शन पाएँ, अपना जीवन सफल बनाएँ।।
तलहटी में मंदिर बनवाया, काकी का मंदिर कहलाया।
उसमें पार्श्व प्रभु पधराए, क्षेत्रपाल द्वारे लगवाए।।
ऊँचे सवा पाँच फुट जानो, श्री जिनेन्द्र के रक्षक मानो।
आचार्य विशद सागरजी आये, चौबीसी निर्माण कराये।।
भक्त कई चरणों में आते, मन की जो फरियाद सुनाते।
बना तिबारा बीच में भाई, निर्मल जल जिसमें सुखदायी।।
उससे जल भरकर के लाते, श्री जिन का अभिषेक कराते।
समवशरण आया था जानो, पार्श्व प्रभु का कहते मानो।।
क्वार शुक्ल दोज को भाई, कलशा होते हैं सुखदायी।
आसपास के श्रावक आते, क्षमा पर्व मिल सभी मनाते।।
भक्ती से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिव सुख पाते।
पौष वदी नौमी सुखदायी, ता दिन मेला लगता भाई।।
दूर-दूर से श्रावक आते, दर्शन कर सौभाग्य जगाते।

पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ।।

दोहा- पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
चंवलेश्वर के पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख शांति सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
''विशद'' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग।।

पार्श्वनाथाष्टक

श्यामो वर्ण विराजितेति विमले श्यामोऽपि सर्पो स्मृतः।
श्यामो मेघनिघर्घरोपि च घटाश्यामं च रात्र्यखिलं।।
वर्षा मूसलधारणं च मखिलं कायोत्सर्गेणतां।
धरणेन्द्रो पद्मावती युगसुरं श्री पार्श्वनाथं नमः।।1।।
नमः श्री पार्श्वनाथाय त्रैलोक्याधिपतेर्गुरुः।
पापं च हरते नित्यं पार्श्वतीर्थस्य दर्शनम्।।2।।
ॐ ऐं क्लीं श्री धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय अतुल बल।
पराक्रमाय ऐं ह्रीं क्लीं क्ष्म्ल्व्र्यूं नमः।।3।।
दर्शनं हरते पापं, दर्शनं हरते दुखं।
दर्शनं हरते रोगान्, व्याधिर्हरति दर्शनम्।।
ॐ आं क्रौं क्ष्म्ल्व्र्यूं नमः।।4।।
दर्शनाल्लभ्यते ज्ञानं, दर्शनाल्लभ्यते धनं।
दर्शनाल्लभ्यते पुत्रं, सुखी भवति दर्शनात्।।
ऐं ॐ अः नमः बार नव जाप्यं दीयते।।5।।
पुत्रार्थी लभते पुत्रं, धनार्थी लभते धनं।
विद्यार्थी लभते विद्यां, सुखी भवति निश्चितं।।6।।
राज्य-मान्यं भवेन्नित्यं, प्रजानां च विशेषतः।
दुर्जनाश्च क्षयं यांति, श्रेयो भवति संकटे।।7।।
इदं स्तोत्रं पठेन्नित्यं त्रि-संध्यं च विशेषतः।
गृहे भवति कल्याणं पार्श्वतीर्थस्तवेन च।।8।।

।। इति ।।

श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ पूजा प्रारम्भ

(स्थापना)

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

गीता छन्द

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल ले, जो नित पूजन करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सब दुख दारिद हरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज मैं विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित मलयागिरि का, चन्दन चरण चढ़ाते हैं।
दिव्य गुणों को पाकर प्राणी, दिव्य लोक को जाते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षय अक्षत, लेकर अर्चा करते हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें प्रभु, चरणों में सिर धरते हैं।।

विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली वकुल कुसुम से, प्रभु की पूजा करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सुख के झरने झरते हैं।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ व्रां व्रीं व्रूँ व्रौं व्रः श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर घृत मेवा युत व्यंजन, कनक थाल में लाये हैं।
अर्पित करते हैं प्रभु पद में, क्षुधा नशाने आये हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीप जलाकर सुन्दर, प्रभु की आरति करते हैं।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, वसु कर्मों से डरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर आदि सुगंधित, धूप दशांग मिलाये हैं।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, अग्नि बीच जलाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला और सुपारी, इत्यादिक फल लाए हैं।
श्री जिनवर के पद पंकज में, मिलकर आज चढ़ाए हैं।।

विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूँ ख्रौ ख्रः श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ अ हां सि हीं आ हूँ उ हौं सा ह्: श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **माँ वामा के लाड़ले, अश्वसेन के लाल।**
विघ्न विनाशक पार्श्व की, कहते हैं जयमाल।।1।।

छन्द– नयमालिनी तथा चण्डी

चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते।।2।।
श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत नमस्ते।।3।।
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते।।4।।
शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते।।5।।
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करुणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम् माथ नमस्ते।।6।।
जन जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते।।7।।
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नात्रय युक्त नमस्ते।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते।।8।।
वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।
जित् उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित सत् इन्द्र नमस्ते।।9।।

दोहा– **भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।**
सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

❋❋❋

अथ प्रथम वलयोपरि पुष्पाजलिं क्षिपेत्।
(अब प्रथम वलय के कोष्ठों पर पुष्पाजलिं क्षेपण करें।)

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन–जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

पंचकल्याणक युत पार्श्व प्रभु की पूजा

(त्रिभगी छन्द)

स्वर्गों में रहे, प्राणत से चये, माँ वामा उर में गर्भ लिये।
वसुदेव कुमारी, अतिशयकारी, गर्भ समय में शोध किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करूँ।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष एकादशि, कृष्णा की निशी काशी में अवतार लिया।
देवों ने आकर बाद्य बजाकर, आनन्दोत्सव महत किया।।
श्री विघ्न विनाशक ..... ।। 2 ।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलि पौष एकादशि व्रत धरके असि, प्रभुजी तप को अपनाया,
भा बारह भावन अति ही पावन, भेष दिगम्बर तुम पाया।।
श्री विघ्न विनाशक ..... ।। 3 ।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, तपकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब क्रूर कमठ ने, बैरी शठ ने, अहिक्षेत्र में कीन्ही मनमानी।
तब चैत अंधेरी, चौथ सबेरी, आप हुए केवलज्ञानी।।
श्री विघ्न विनाशक ..... ।। 4 ।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातै सावन, अतिमन भावन, सम्मेद शिखर पे ध्यान किए।
वर के शिवनारी, अतिशयकारी, आतम का कल्याण किए।।
श्री विघ्न विनाशक ..... ।। 5 ।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, विशद मोक्ष कल्याण।**
प्राप्त किये जिन देव ने, तिनको करूँ प्रणाम।।6 ।।

ॐ ह्रीं सर्व बन्धन विमुक्त, पंचकल्याणक प्राप्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्
(द्वितीय वलय के कोष्ठों पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

दस धर्म युत पार्श्व प्रभु की पूजा

(चाल छन्द)

जो रंच क्रोध न लावें, मन में समता उपजावें।
हे ! उत्तम क्षमा के धारी, जन जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।1 ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम क्षमा धर्म सहित श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके उर मान न आवे, मन समता में रम जावे।
हे ! मार्दव धर्म के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।2 ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम मार्दव धर्म सहित श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो कुटिल भाव को त्यागें, औ सरल भाव उपजावें।
वे उत्तम आर्जव धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।3 ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम आर्जव धर्म सहित श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मन से मूर्छा त्यागें, औ आतम ध्यान में लागें।
वे उत्तम शौच के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी ।।4 ।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम शौच धर्म सहित श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मन में हो सो भाषें, तन को उसमें ही राखें।
वे उत्तम सत्य के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम सत्य धर्म सहित श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो इन्द्रिय मन संतोषें, षट्काय जीव को पोषें।
वे उत्तम संयम धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम संयम धर्म सहित श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो द्वादश विध तप धारें, वसु कर्मों को निरवारें।
वे उत्तम तप के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम तप धर्म सहित श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्य नहीं अपनावें, चेतन में ही रमजावें।
वे त्याग धर्म के धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम त्याग धर्म सहित श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो किंचित् राग न लावें, वो वीतरागता पावें।
वे आकिञ्चन व्रत धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम आकिञ्चन धर्म सहित श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो निज पर तिय के त्यागी, शुभ परम ब्रह्म अनुरागी।
वे ब्रह्मचर्य व्रत धारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहित श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सत् चेतन चित्धारी, निज आतम ब्रह्म बिहारी।
वे क्षमा आदि वृषधारी, जन-जन के करुणाकारी।।
श्री पार्श्वनाथ जिन देवा, हम करें चरण की सेवा।
हे ! विघ्न विनाशनकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।11।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त, क्षमादि धर्म सहित श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ तृतीय वलयोपरि पुष्पाजलिं क्षिपेत्
(तृतीय वलय पर क्षेपण करें।)

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

4 आराधना 16 कारण भावना युत पार्श्व प्रभु की पूजा

(गीता छन्द)

पच्चीस दोष विमुक्त शुभ, अष्टांग सद्दर्शन कह्यो।
जिनदेव आगम मुनिवरों में, हृदय से श्रद्धा गह्यो।
जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरु, भव सुखों की खान है।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्दर्शनाराधनाय सर्व बंधन विमुक्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री द्वादशांग जिनेन्द्र वाणी अष्टांगमय निर्दोष है।
सम्यक् विभूषित आत्म ज्योति, ज्ञान गुण की कोष है।।
जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरु, भव सुखों की खान है।। 2।।

ॐ ह्रीं अष्टांग शुद्ध सम्यक्ज्ञानाराधनाय सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचों महाव्रत समिति गुप्ति, मन वचन औ काय हो।
तेरह विधी चारित्र पालें, हृदय से हर्षाय हो।।
जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरु, भव सुखों की खान है।। 3।।

ॐ ह्रीं तेरहविध शुद्ध सम्यक्चारित्राराधनाय सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् विधि तप तपे द्वादश, बाह्य अभ्यंतर सभी।
निज कर्म क्षय के हेतु तपते, चाह न रखते कभी।।
जिन तीर्थ पद पाके बने, सद्भक्त भी भगवान है।
यह तीर्थ पद का मूल है अरु, भव सुखों की खान है।। 4।।

ॐ ह्रीं द्वादश विधि शुद्ध सम्यक् तपाराधनाय सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन विशुद्धी भावना शुभ, दोष बिन निर्मल सही।
यह मोक्ष बट का बीज उत्तम, या बिना नहिं शिव मही।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
दर्शन विशुद्धि भावना शुभ, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।5।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित दर्शन विशुद्धि भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय गुण सद्धर्म का शुभ, मूल तुम जानो सही।
बिन विनय किरिया धर्म की, इस लोक में निष्फल कही।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा-मंगल रूप है।
पाऊँ विनय सम्पन्नता जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।6।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित विनय सम्पन्न भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्दोष अष्टादश सहस व्रत, शील का पालन महा।
अतिचार रहित सुव्रतों की शुभ, भावना में रत रहा।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
शीलव्रत अनतिचार है जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।7।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित अनतिचार शीलव्रत भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिश्रुत अवधि सुज्ञान मनः, पर्यय तथा केवल कहा।
सद्ज्ञान के उपयोग में, जिनका सु मन नित रत रहा।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं ज्ञानोपयोग ऽभीक्ष्ण जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।8।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो धर्म औ सद्धर्म फल में, हर्ष मय संयुक्त हैं।
जो जगत् दुख मय जानकर, विषयों से पूर्ण विरक्त हैं।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं भाव संवेगता जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।9।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित संवेग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये पाप गिरि के तोड़ने को, सुतप वज्र समान है।
तप ही भवोदधि पार हेतु, विमल अमन विमान है।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं सम्यक् तप हृदय से, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।10।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित शक्तितस्तप भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है राग आग जलाय सद्गुण, त्याग जग सुखदाय है।
भवि त्याग भाव जगाय उर में, यही मोक्ष उपाय है।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं त्याग सुभावना जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।11।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित शक्तितस्त्याग भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

या विधि मुनिन को सुख बढ़े, साधु समाधि जानिए।
उपसर्ग परीषह राग भय, बाधा सभी कुछ हानिए।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं साधु समाधि भाव जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।12।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित साधु समाधि भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु जन की साधना के, विघ्न सारे टालकर।
साधना में हो सहायक, भाव शुभम् संभालकर।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं वैयावृत्ति भाव जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।13।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित वैय्यावृत्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय चौंतिस प्रातिहार्य वसु, ऽनन्त चतुष्टय जानिए।
छियालीस गुण संयुक्त निर्मल, भक्ति भाव प्रमानिए।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं अर्हत् भावना जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।14।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित अर्हद् भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन सुज्ञान चारित्र तप, अरु वीर्य पंचाचार हैं।
छत्तीस गुण संयुक्त गुरु की, भक्ति जग में सार है।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं जजूं आचार्य भक्ति भाव जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।15।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित आचार्य भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुत ज्ञान द्वादश अंग चौदस, पूर्व धारी जिन मुनी।
पढ़ते पढ़ाते मुनिवरों को, उपाध्याय भक्ती गुणी।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं बहुश्रुत भक्ति भाव जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।16।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित बहुश्रुत भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्याद्वाद युत अनेकांतमय, जिनदेव की वाणी कही।
जो है प्रकाशक चराचर की, विमल जिन वाणी रही।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं प्रवचन भक्ति भाव जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।17।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित प्रवचन भक्ति भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता सुवन्दन प्रतिक्रमण, व्युत्सर्ग प्रत्याख्यान है।
स्तव सहित षट् कर्म पालन, से ही निज कल्याण है।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं आवश्यक अपरिहार जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।18।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित आवश्यकापरिहार्य भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह का तम सघन जग में, कठिन जिसका पार है।
जिन मार्ग का उद्योत करना, मोक्ष मारग सार है।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं मार्ग प्रभावना जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।19।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित मार्ग प्रभावना भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनदेव की वाणी सुनिर्मल, मोक्ष की दातार है।
वात्सल्य प्रवचन शास्त्र में हो, यही सुख आधार है।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महा मंगल रूप है।
मैं जजूं वात्सल्य भावना जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।20।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित वात्सल्य भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व दर्शन ज्ञान चारित, सद्गुणों के कोष हैं।
श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र जग में, विघ्नहर निर्दोष हैं।।
जो देय तीरथ नाथ पदवी, महामंगल रूप है।
मैं भाऊँ सोलह भावना जो, शुद्ध सिद्ध स्वरूप है।।21।।

ॐ ह्रीं सर्व दोष रहित चऊ आराधना दर्शन विशुद्धिआदि षोडश भावनायै सर्व कर्म बंधन विमुक्त श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्
(चतुर्थ वलय पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

पार्श्व प्रभु की पूजा

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

32 इन्द्र एवं 8 कुमारी द्वारा पूजित

(जोगी रासा छन्द)

असुर इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजन करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।1।।

ॐ ह्रीं असुर कुमारेण सपरिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाग इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।2।।

ॐ ह्रीं नागेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपर्णेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।4।।

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।5।।

ॐ ह्रीं अग्निइन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मारुतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।6।।

ॐ ह्रीं मारुतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तनितेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।7।।

ॐ ह्रीं स्तनितेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागरेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।8।।

ॐ ह्रीं सागरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे।।9।।

ॐ ह्रीं दीप इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिक्सुरेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।10।।

ॐ ह्रीं दिक्सुरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किन्नरेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।11।।

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किम्पुरुष इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।12।।

ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महोरगेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।13।।

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धर्व इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।14।।

ॐ ह्रीं गन्धर्व इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।15।।

ॐ ह्रीं यक्ष इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षस इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।16।।

ॐ ह्रीं राक्षस इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।17।।

ॐ ह्रीं भूत इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिशाचेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।18।।

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।19।।

ॐ ह्रीं चन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।20।।

ॐ ह्रीं रविइन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्म इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।21।।

ॐ ह्रीं सौधर्म इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईशान इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।22।।

ॐ ह्रीं ईशान इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सानतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।23।।

ॐ ह्रीं सानतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।24।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।25।।

ॐ ह्रीं ब्रह्म इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र परिवार सहित, जिनपूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।26।।

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।27।।

ॐ ह्रीं शुक्र इन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतारेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।28।।

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।29।।

ॐ ह्रीं आनतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।30।।

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरणेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।31।।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।। 32।।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।33।।

ॐ ह्रीं श्री देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ह्रीं देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।34।।

ॐ ह्रीं ही देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धृति देवी परिवार सहित जिन, पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।35।।

ॐ ह्रीं धृतिदेवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कीर्ति देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।36।।

ॐ ह्रीं कीर्ति देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धि देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।37।।

ॐ ह्रीं बुद्धि देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।38।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मी देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।39।।

ॐ ह्रीं शांति देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्टि देवी परिवार सहित, जिन पूजा करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।40।।

ॐ ह्रीं पुष्टि देवी परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव इन्द्र वसु देवियाँ, जिन पूजन करने आवे।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ के, पद पंकज को ध्यावे ।।41।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशत इन्द्र एवं अष्ट कुमारिका परिवार सहिताय पाद पद्मार्चिताय जिननाथ पद प्रदाय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचम वलयोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्। (पंचम वलय पर पुष्पांजलि क्षेपण करें।)

स्थापना

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम तुम्हारा लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, सर्व लोकोत्तम श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, जगत् शरण श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

64 ऋद्धि 8 प्रातिहार्य 8 गुण युक्त पार्श्वप्रभु

तर्ज – रंगमा-रंगमा (परदेशी-परदेशी...)

तीन लोक तिहुँ काल के सुन भाई रे ! सकल द्रव्य को जाने हो जिन भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! केवल बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।1।।

ॐ ह्रीं केवल बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर के मन की बात को जाने भाई रे ! मन: पर्यय बुद्धि ऋद्धि धर भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! मन: पर्यय ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।2।।

ॐ ह्रीं मन:पर्यय बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुद्गल परमाणु को भी जाने भाई रे ! अवधि ऋद्धि को धार मुनीश्वर भाई रे !!
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! अवधि बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।3।।

ॐ ह्रीं अवधि बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भरी कोष्ठ में वस्तु अनेकों भाई रे ! शब्द अर्थ मय कोष्ठ ऋद्धि धर पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! कोष्ठ बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।4।।

ॐ ह्रीं कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीज बोय तो धान अधिक हो भाई रे ! बीज ऋद्धि में सार ग्रंथ को गाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! बीज बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।5।।

ॐ ह्रीं बीज बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगपद बहु शब्दों को सुनकर भाई रे ! सर्व का धारण हो जावे मन भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! संभिन्न-श्रोतृ ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।6।।

ॐ ह्रीं संभिन्न-श्रोतृ ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लखें एक पद जैन मुनीश्वर भाई रे ! सब ग्रन्थों का सार कहे सुन भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! पदानुसारि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।7।।

ॐ ह्रीं पादानुसारिणी बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव योजन से दूर की सुन भाई रे ! स्पर्शन की शक्ति ऋषिवर पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे! दूरस्पर्शन ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।8।।

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शन बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ योजन से दूर की सुन भाई रे ! रसस्वाद की शक्ति ऋषिवर पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! दूरास्वादन ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।9।।

ॐ ह्रीं दूरास्वादन ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौ योजन से दूर की सुन भाई रे ! गंध ग्रहण की शक्ति ऋषिवर भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! दूर गन्ध ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।10।।

ॐ ह्रीं दूरगन्ध ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो सौ सेंतालिस सहस तिरेसठ भाई रे ! योजन दृष्टि को बल ऋषिवर पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! दूरावलोकन ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।11।।

ॐ ह्रीं दूरावलोकन ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश योजन दूर को सुन भाई रे ! दूरश्रवण ऋद्धि ऋषिवर ने पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! दूरश्रवण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।12।।

ॐ ह्रीं दूरश्रवण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषिश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशम पूर्वधर सब विद्याएँ पाई रे ! लौकिक इच्छा कुछ न ऋषिश्वर चाही रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! दशम पूर्व ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।13।।

ॐ ह्रीं दशम पूर्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदह पूरब धारण तप से पाई रे ! चरण कमल में मन वच तन सिर नाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! चौदह पूर्व ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।14।।

ॐ ह्रीं चतुर्दश पूर्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भौम अंग स्वर व्यंजन लक्षण भाई रे ! अष्टांग निमित्त, बुद्धि ऋद्धीधर पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! अष्टांग-निमित्त बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।15।।

ॐ ह्रीं अष्टांग निमित्त बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवादिक के भेद पढ़े बिन गाई रे ! अंग पूर्व का ज्ञान मुनी समझाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! प्रज्ञा श्रवण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।16।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रवण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर पदार्थ तें जीव भिन्न हैं भाई रे ! यातें पर की चाहत मेटो भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! प्रत्येक-बुद्धि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।17।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परवादी ऋषिवर के सम्मुख आई रे ! स्याद्वाद कर किया पराजित भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! वादित्य ऋद्धीधर पूजों हो जिन भाई रे !।।18।।

ॐ ह्रीं वादित्य बुद्धि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल के ऊपर थल वत् चालें भाई रे ! जल जंतु का घात न होवे भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! जल चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।19।।

ॐ ह्रीं जल चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ अंगुल भू ऊपर चालें भाई रे ! क्षण में बहु योजन तक जावे भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! जंघा चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।20।।

ॐ ह्रीं जंघा चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मकड़ी के तंतु पर चालें भाई रे ! भार से तंतु भी न टूटे भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! तंतु चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।21।।

ॐ ह्रीं तंतुचारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प के ऊपर गमन करें सुन भाई रे ! पुष्प जीव को बाधा न हो भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! पुष्प चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।22।।

ॐ ह्रीं पुष्पचारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पत्रों के ऊपर गमन करें सुन भाई रे ! पत्र जीव को बाधा न हो भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! पत्र चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।23।।

ॐ ह्रीं पत्र चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बीजन पे मुनि गमन करें सुन भाई रे ! बीज जीव को बाधा ना हो भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! बीजा चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।24।।

ॐ ह्रीं बीज चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेणी वत् मुनि गमन करे सुन भाई रे ! षट्काय जीव को घात न होवे भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! श्रेणी चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।25।।

ॐ ह्रीं श्रेणीचारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि शिखा पे गमन करें सुन भाई रे ! अग्नि शिखा भी हले नहीं सुन भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! अग्नि चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।26।।

ॐ ह्रीं अग्नि चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्युत्सर्गादि आसन से मुनि भाई रे ! गमन करें नभ माहिं ऋषीश्वर भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! नभ चारण ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।27।।

ॐ ह्रीं नभ चारण ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणु समान काया हो जावे भाई रे ! कमल तंतु पर निराबाध तिष्ठाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! अणिमा ऋद्धीधर पूजों जिन भाई रे !।।28।।

ॐ ह्रीं अणिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लख योजन तन की ऊँचाई रे ! नरपति का वैभव उपजावे भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! महिमा ऋद्धीधर पूजों जिन भाई रे !।। 29।।

ॐ ह्रीं महिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया विशाल मुनि जन–जन को दिखलाई रे ! अर्क तूल सम हल्का तन हो भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! लघिमा ऋद्धीधर पूजों जिन भाई रे !।।30।।

ॐ ह्रीं लघिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काया सूक्ष्म मुनि सब जन को दिखलाई रे ! इन्द्रादिक के द्वारा न हिल पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! गरिमा ऋद्धीधर पूजों जिन भाई रे !।।31।।

ॐ ह्रीं गरिमा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य चंद्र ग्रह मेरुगिरि सुन भाई रे ! भू पर रह स्पर्श करें मुनि भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! प्राप्ति ऋद्धीधर पूजों जिन भाई रे !।।32।।

ॐ ह्रीं प्राप्ति ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु विधि रूप बनाते मुनिवर भाई रे ! पृथ्वी में जल वत् धस जावें भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! प्राकाम्य ऋद्धीधर पूजों जिन भाई रे !।।33।।

ॐ ह्रीं प्राकाम्य ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक की प्रभुता मुनिवर पाई रे ! इन्द्रादिक सब शीष झुकाते भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! ईशत्व ऋद्धीधर पूजों जिन भाई रे !।।34।।

ॐ ह्रीं ईशत्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके वल्लभ गुण के दाता भाई रे ! तीन लोक दर्शन करके वश हो जाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! वशित्व ऋद्धीधर पूजों जिन भाई रे !।।35।।

ॐ ह्रीं वशित्व ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत माहिं निकस जावें मुनि भाई रे ! रुकें नहीं काहू से मुनिवर भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! अप्रतिघात ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।36।।

ॐ ह्रीं अप्रतिघात ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके देखत प्रच्छन्न होवें भाई रे ! मुनि को जाते कोई देख न पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! अन्तर्धान ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।37।।

ॐ ह्रीं अन्तर्धान ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वांछित बहु रूप बनावें भाई रे ! कामरूपिणी विद्या मुनिवर पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! कामरूप ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।38।।

ॐ ह्रीं कामरूप ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशनादि तप करके अधिक बढ़ाई रे ! उग्र तपोऋद्धि तें ऋषिवर पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! उग्र तपो ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।39।।

ॐ ह्रीं उग्र तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशनादि कर क्षीण भयो तन भाई रे ! दीप्त तपो ऋद्धि में दीप्ति पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! दीप्त सुतप ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।40।।

ॐ ह्रीं दीप्त तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहार करत नीहार न होवे भाई रे ! तन में शुष्क हो तप ऋद्धि तें भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! तप्त सुतप ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।41।।

ॐ ह्रीं तप्त तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रस नाणी में सबनि जीव के भाई रे ! सबहि भाव की जानन शक्ति पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! महातपो ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।42।।

ॐ ह्रीं महातपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग व्यथा अनशनादि मुनि पाई रे ! ध्यान व्रतों से डिगें नहीं ऋषि भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! घोर तपो ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।43।।

ॐ ह्रीं घोर तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्ट सतावें ऋषिवर को सुन भाई रे ! मरी आदि भय आवे जग में भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! घोर पराक्रम ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।44।।

ॐ ह्रीं घोर पराक्रम तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अघोर ब्रह्मचर्य धारी हो ऋषि भाई रे ! सर्व रोग मिट जावे मुनि ठहराई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।45।।

ॐ ह्रीं अघोर ब्रह्मचर्य तपोतिशय ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञान के सब अक्षर को भाई रे ! मन में अर्थ विचारि मुहूर्त्त में पाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! ऋषि मनोबल ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।46।।

ॐ ह्रीं मनोबल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रुतज्ञान को पाठ मुहूर्त्त में भाई रे ! कण्ठ में खेद न होवे करके भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! ऋषि वचन बल ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।47।।

ॐ ह्रीं वचन बल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक ऊँगली तें मुनि हिलाई रे ! गर्व करें नहिं बल को जिन मुनिराई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! काया बल ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।48।।

ॐ ह्रीं कायबल ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर के चरणों की रज भाई रे ! हरती सारे रोग क्षणिक में भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! आमर्षौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।49।।

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि को थूक खखार लगत सुन भाई रे ! मिटते सारे रोग तुरत ही भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! खेल्लौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।50।।

ॐ ह्रीं खेल्लौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर तन की स्वेद युक्त रज भाई रे ! सर्व व्याधि स्पर्श किए नश जाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! जल्लौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।51।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दंत नासिका अंगों का मल भाई रे ! सर्व रोग को क्षण में देय नशाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! मल्लौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।52।।

ॐ ह्रीं मल्लौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्य मूत्र मल मुनि के तन का भाई रे ! नाना व्याधि को क्षण में देय नशाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! विडौषधी ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।53।।

ॐ ह्रीं विडौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि तन से स्पर्शित चले हवाई रे ! आधि व्याधि को क्षण में देय नशाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! सर्वौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।54।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि के कर में विष अमृत हो भाई रे ! वचन सुनत मूर्छित निर्विष हो भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! आस्य विषौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।55।।

ॐ ह्रीं आस्य विषौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्पादिक का जहर व्याप्त तन भाई रे ! मुनि की दृष्टि परत दूर हो जाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! दृष्टि विषौषधि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।56।।

ॐ ह्रीं दृष्टि विषौषधि ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर क्रोध से कहते तू मर जाई रे ! सुनकर प्राणी तुरन्त ही मर जाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! आशीर्विष ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।57।।

ॐ ह्रीं आशीर्विषा ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध दृष्टि मुनि की पड़ जावे भाई रे ! दृष्टि पड़ते तुरन्त मर जावे भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! दृष्टि विष ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।58।।

ॐ ह्रीं दृष्टि विषरस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में आहार पड़त ही भाई रे ! क्षीर युक्त सुस्वादु होवे भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! क्षीर स्रावि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।59।।

ॐ ह्रीं क्षीर स्रावि रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में आहार पड़त ही भाई रे ! मधु सम मिष्ठ सुगुण हो जावे भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! मधुस्रावि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।60।।

ॐ ह्रीं मधुस्रावि रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में आहार पड़त ही भाई रे ! घृत सम मिष्ठ सुगुण हो जावे भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! घृतस्रावि ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।61।।

ॐ ह्रीं घृतस्रावी रस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि कर में विष अमृत होवे भाई रे ! वचनामृत संतुष्ट करें सुन भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! अमृतस्रावी ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।62।।

ॐ ह्रीं अमृतस्रावी ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि आहार करें जाके घर भाई रे ! चक्रवर्ती की सेना तहं पे जीमें भाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! अक्षीण संवास ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।63।।

ॐ ह्रीं अक्षीण संवास ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार हाथ घर में मुनि तिष्ठे भाई रे ! ता घर चक्रवर्ती की सैन्य समाई रे !
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन भाई रे ! अक्षीण महानस ऋद्धीधर पूजों भाई रे !।।64।।

ॐ ह्रीं अक्षीण महानस ऋद्धि धारक, सर्व ऋषीश्वर पूजित, श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल टप्पा)

प्रातिहार्य जुत समवशरण की, शोभा दर्शाई।
तरु अशोक है, शोक निवारक, भविजन सुख दाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।65।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं अशोक वृक्ष सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाभक्ति वश सुरपुर वासी, पुष्प लिए भाई।
पुष्प वृष्टि करते हैं मिलकर, मन में हर्षाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।66।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुपथ विनाशक सुपथ प्रकाशक, शुभ मंगल दाई।
दिव्य ध्वनि सुनते नर सुर पशु, हिरदय हर्षाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।67।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय अनुपम धवल मनोहर, सुन्दर सुखदाई।
चौंसठ चँवर ढुरे प्रभु आगे, अति शोभा पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।68।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं धवलोज्ज्वल चौंसठ चँवर सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम वीर अतिवीर जिनेश्वर, जगत् पूज्य भाई।
रत्न जड़ित अतिशोभा मंडित, सिंहासन पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।69।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं रत्नजड़ित सिंहासन सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महत् ज्योति श्री जिनवर तन की, अतिशय चमकाई।
प्रभा पुँज युत प्रातिहार्य शुभ, भामण्डल पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।70।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं भामण्डल सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर्ष भाव से सुरगण मिलकर, बाजे बजवाई।
देव दुन्दुभी प्रातिहार्य शुभ, श्री जिनवर पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।71।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं दुन्दभि सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़े कनक नग क्षत्र मणीमय, रत्न माल लपटाई।
तीन लोक के स्वामी हों ज्यों, क्षत्रत्रय पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।72।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं क्षत्र त्रय सत् प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुष्ट महाबली मोह कर्म का, नाश किए भाई।
निज अनुभव प्रत्यक्ष किए जिन, समकित गुण पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।73।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं अनन्त सम्यक्त्व गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उभय लोक षट् द्रव्य अनन्ता, युगपद दर्शाई।
निरावरण स्वाधीन अलौकिक, 'विशद' ज्ञान पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।74।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं अनन्त ज्ञान गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्षु दर्शनावरण आदि सब, घातक कर्म नशाई।
सकल ज्ञेय युगपद अवलोके, उत्तम दर्शन पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।75।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं अनन्त दर्शन गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तराय कर्मों ने शक्ति, आतम की खोई।
ते सब घात किये जिन स्वामी, बल असीम पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।76।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं अनन्त वीर्य गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म के भेद अनेकों, नाश किये भाई।
चित्-स्वरूप चैतन्य जीव ने, सूक्ष्मत्व सुगुण पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।77।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक क्षेत्र अवगाह जीव के, संश्लेष पाई।
निज पर घाती कर्म नशाए, अवगाहन पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।78।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं अवगाहनत्व गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँच-नीच पद मेट निरन्तर, निज आतम ध्यायी।
उत्तम अगुरु-लघु गुण योगी, स्वगुण प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।79।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं अगुरु-लघुत्व गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य निरंजन भव भय भंजन, शुद्ध रूप ध्यायी।
अव्याबाध गुण प्रकट किए जिन, पूजों हर्षाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।80।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं अव्याबाध गुण प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ ऋद्धि धार मुनीश्वर, वसु गुण प्रगटाई।
प्रातिहार्य वसु पाये प्रभु ने, भविजन सुख दाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।।81।।
विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ जिन, पूजों हो भाई जिने...

ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धि धर अष्टगुण एवं अष्ट सत प्रातिहार्यातिशय प्राप्ताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(धत्ता छन्द)

श्री पार्श्व जिनन्दा श्री जिन चंदा, शिवसुख कंदा ज्ञान धरा।
हम पूजें ध्यावें तव गुण गावें, मिट जावे मृतु जन्म जरा।।

पुष्पाजंलि क्षिपेत्।

जाप :- (1) ॐ नमोऽर्हते भगवते सकल विघ्नहर ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं, ह्र: अ सि आ उ सा श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय सर्वोपद्रव शांतिं, लक्ष्मी लाभं कुरु कुरु नम: स्वाहा।

(2) ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: स्वाहा।

जयमाला

दोहा - **तीन योग से देव की, पूजा करूँ त्रिकाल।**
विघ्न विनाशक पार्श्व की, अब गाऊँ जयमाल।।

(हे दीन बंधु श्री पति...)

जय जय जिनेन्द्र पार्श्वनाथ देव हमारे,
जय विघ्न हरण नाथ भव दु:ख निवारे।।
जय-जय प्रसिद्ध देव का गुणगान मैं करूँ,
जय अष्ट कर्म मुक्त का शुभ ध्यान मैं करूँ।।1।।

छ: माह पूर्व गर्भ के, नगरी को सजाया,
देवों ने सारे लोक में शुभ हर्ष मनाया।।
काशी नरेश अश्वसेन धर्म के धारी,
रानी थी वामादेवी, शुभ लक्षणा नारी।।2।।

प्राणत विमान से चये सुगर्भ में आये,
देवेन्द्र ने प्रसन्न हो बहु रत्न वर्षाये।
एकादशी को पौष कृष्ण जन्म जिन पाया,
आनन्द रहस देवों ने आके रचाया।।3।।

सौधर्म इन्द्र ऐरावत स्वर्ग से लाया,
पाण्डुक शिला में जाके अभिषेक कराया।
बालक के दायें पग में अहि चिह्न था प्यारा,
पारस कुमार नाम ले सौधर्म पुकारा।।4।।

माता के हाथ सौंप दिए इन्द्र बाल को,
माता पिता प्रसन्न हुए देख लाल को।
बढ़ने लगे कुमार श्वेत चाँद के जैसे,
उपमा नहीं है कोई गुणगान हो कैसे।।5।।

करते कुमार क्रीड़ा मित्रों के साथ में,
लेते कुमार को सभी अपने सु हाथ में।।
अष्टम बरस की उम्र में देशव्रत धारे,
रहने लगे कुमार जग में जग से न्यारे।।6।।

यौवन अवस्था देख पिता ब्याह की ठानी,
बोले कुमार चाहूँ मैं मोक्ष की रानी।
हाथी पे बैठ जंगल की सैर को गये,
देखे वहाँ पे जाके अचरज कई नये ।।7 ।।

पञ्चाग्नि तप में तापसी खुद को तपा रहा,
लकड़ी में कई जीवों को वह जला रहा।
तापस से कहा पार्श्व ने क्यों जीव जलाते,
जलते हुए प्राणी सभी दुख वेदना पाते ।।8 ।।

गुस्से में आके तापसी पारस से यूं बोला,
छोटे से मुख से बात बड़ी क्यों तू बोला।
पारस ने तापसी को विश्वास दिलाया,
लकड़ी को फाड़ते ही युगल नाग दिखाया ।।9 ।।

नवकार मंत्र नाग युगल को सुना दिया,
जीवों ने जाके स्वर्ग लोक जन्म पा लिया।
वैराग्य पूर्ण दृश्य देख भावना भाये,
ब्रह्म ऋषि देव तब संबोधने आये ।।10 ।।

तब देव चउ निकाय के वहाँ पालकी लाये,
शुभ पालकी में बैठ देव वन को सिधाए।
वहाँ पंच मुष्टि केशलोंच महाव्रत धारे,
फिर पय के धन-दत्त गृह लिए आहारे।।11 ।।

देवों ने तभी पंच विधी रत्न वर्षाये,
अहो दान पात्र बोल बोल देव हर्षाये।
जंगल में जाके पार्श्व प्रभु योग धर लिया,
पूरब के बैरी कमठ ने तब गौर कर लिया ।।12 ।।

कीन्हा तभी उपसर्ग वहाँ आकर भारी,
घोर अंधकार किया रात ज्यों कारी।

तीक्ष्ण तीव्र वेग वाली तब हवा चलाई,
प्रचण्ड और भयानक तब दाह लगाई ।।13 ।।

सु रण्डन के चउ दिश में मुण्ड दिखाए,
मूसल की धार सम वहाँ मेघ बरसाए।
पद्मावती धरणेन्द्र तभी दर्श को आए,
शीष पे बिठाय छत्र फण का बनाए ।।14।।

हार मान कमठ देव चरण झुक गया,
कैवल्य ज्ञान जिनवर को तभी हो गया।
भव्यों को उपदेश देके बोध जगाया,
जीवों को आपने शुभ मार्ग दिखाया ।।15।।

प्रभु स्वर्ण भद्रकूट तीर्थराज पर गये,
कर्म चउ अघातिया प्रभु वहाँ पे क्षये।
शुभ धीर-धारी धर्म धर पार्श्वनाथजी,
'विशद' भाव सहित झुके चरण माथ जी ।।16 ।।

(धत्ता छन्द)

श्री पार्श्व जिनेशा, नाग नरेशा, नमित महेशा भक्ति भरा।
मन, वच, तन ध्यावें, हर्ष बढ़ावें, मंगलमय हो पूर्णधरा ।।

ॐ ह्रीं सकल विघ्नहराय अनन्त चतुष्टय केवलज्ञान लक्ष्मी संयुक्ताय परम पवित्राय सर्वकर्म रहिताय श्री विघ्नहर चंवलेश्वर पार्श्वनाथाय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **पार्श्व प्रभु के चरण में, भक्ति सहित झुक जाय।**
'विशद' ज्ञान पाके शुभम्, स्वयं पार्श्व बन जाय।।

(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

इन्सान का जीवन क्या ? एक सुन्दर सी लोरी है।
सम्पूर्ण प्रेक्टीकल नहीं मात्र थोड़ी सी थ्योरी है ।।
गंगा गये गंगादास यमुना गये यमुनादास कहावत पुरानी है।
गिरगिट की भांति रूप बदलना इन्सान की कमजोरी है।।

आरती – चंवलेश्वर पार्श्वनाथ भगवान

(तर्ज– लाल दुपट्टा उड़ गया....)

धन्य हुए हैं, पार्श्व प्रभु के, दर्शन पाए हैं।–2
खुश्बू महकी है जीवन में, भाग्य जगाए हैं।–2
चलो रे सब झूमो गाओ, प्रभु की आरती गाओ ।। टेक।।

नाग युगल को, णमोकार का मंत्र सुनाया था।
'विशद' स्वर्ग में नाग युगल ने जीवन पाया था।।
प्रभु पार्श्वनाथ की जय जय जय, श्री महावीर की जय जय जय।
देव युगल प्रभु भक्ति करने, स्वर्ग से आये हैं ।। धन्य..... ।।1 ।।

तप करने वाले तपसी का, कुतप छुड़ाया था।
अज्ञानी जीवों को मुक्ति, मार्ग दिखाया था।
जय पार्श्वनाथ जी नमो नमः, जय महावीर जी नमो नमः।
तीर्थ वन्दना करके मन में, हम हर्षाए हैं।। धन्य.....।।2 ।।

नथमल सेठ को चंवलेश्वर में, स्वप्न दिखाया था।
पार्श्वनाथ को खोद जमी से, सेठ ने पाया था।
मंदिर बनवाया हाँ भाई, प्रभु को पधराया हाँ भाई।
दूर–दूर से यात्री प्रभु के, दर्श को आए हैं ।। धन्य.....।।3 ।।

(तर्ज– अगर तुम मिल आओ...)

प्रभु के गुण गाओ, प्रभु भक्ति में झूमे हम।
प्रभु की अर्चा करते ही, नाश होते हैं सारे गम।। प्रभु के....

1. प्रभु का दर्श मिलता है, जिसे वह धन्य होता है।
   करे पूजा प्रभु की जो, उसे बहुपुण्य होता है।
   करें हम अर्चना प्रभु की, रहे हाथों में जब तक दम ।। प्रभु के...

2. तुम्हारे हम मेरे बाबा, सभी मिल गीत गाते हैं।
   चरण में भक्ति से आकर, 'विशद' माथा झुकाते हैं।
   रहे श्रद्धान अन्तर में, समर्पण हो कभी न कम।। प्रभु के...
3. मिला दर्शन हमें जब से, प्रभु पारस तुम्हारा है।
   मेरे सौभाग्य का तब से, श्रेष्ठ चमका सितारा है।
   दरश पाकर प्रभु मेरे, खुशी से नेत्र होते नम।। प्रभु के...

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

प्रभू पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारें थारी मूरत निहारें।
प्रभु कर दो भव से पार– आज थारी.....

अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आँखों के तारे।
जन्मे है काशीराज– आज थारी..... ।।1 ।।

बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्न विनाशक मंगलकारी।
जैन धर्म के ताज– आज थारी..... ।।2 ।।

नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया।
किया प्रभू उपकार– आज थारी..... ।।3 ।।

नथमल को तुम स्वप्न दिखाया, पर्वत के ऊपर प्रगटाया।
चंवलेश्वर के धाम– आज थारी..... ।।4 ।।

चँवले की मूरत है प्यारी, जो है भारी अतिशयकारी।
हुए कई चमत्कार– आज थारी..... ।।5 ।।

दीन बन्धु हे ! केवलज्ञानी, भव–दुःखहर्ता शिव सुख दानी।
करो जगत उद्धार– आज थारी..... ।।6 ।।

''विशद'' आरती लेकर आये, भक्ति भाव से शीश झुकाये।
जन–जन के सुखकार– आज थारी आरती..... ।।7 ।।

भजन

(तर्ज – तुमसे लागी लगन...)

तुम हो तारण तरण, वीर संकट हरण, पारस प्यारे।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।
कृपा हम पर करो, कष्ट सारे हरो, जिन हमारे।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।

काशी नगरी में जन्म लिया है, वामादेवी को धन्य किया।
अश्वसेन कुँवर, धरी वन की डगर, संयम वारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।

तुमने छोड़ा है धनधाम सारा, छोड़ जग में सभी का सहारा।
तपसी से यह कहा, क्यों जलाते अहा, नाग कारें।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।

मंत्र नागों को प्रभु ने सुनाया, जन्म स्वर्गों में जीवों ने पाया।
लिये उपकार जिन, पार्श्व जी स्वार्थ बिन, प्रभु हमारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।

प्रभु पारस ने ध्यान लगाया, कमठ पापी ने उपसर्ग ढाया।
धरणेन्द्र पद्मावती, आए नागपति, सुर विचारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।

फण को पद्मावती ने फैलाया, प्रभु पारस को ऊपर बैठाया।
धरणेन्द्र आया वहाँ, फण का छत्र बना, उपसर्ग टारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।

केवलज्ञान प्रभु ने जगाया, 'विशद' जीवों ने उपदेश पाया।
गये सम्मेदगिरि, पाये मुक्तिश्री, जिन हमारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।

(तर्ज– दुनियाँ में गुरु....)

दुनियाँ में तीर्थ हजारों हैं, पर चंवलेश्वर का क्या कहना।
इसकी शोभा का क्या कहना, इसकी आभा का क्या कहना।।

1. दर्शन करने को वहाँ गये, पूजा के मेरे भाग्य जगे।
पर्वत चोटी का क्या कहना, शुभ हरियाली का क्या कहना।।
दुनियाँ में.....

2. जहाँ नदी की धारा प्यारी है, वहाँ बनी तलहटी न्यारी है।
वहाँ जिन मंदिर का क्या कहना, वहाँ पार्श्व प्रभु का क्या कहना।।
दुनियाँ में.....

3. शुभ छतरी में भगवान वहाँ, है क्षेत्रपाल स्थान जहाँ।
वहाँ चौबीसी का क्या कहना, शुभ पर्वत माला क्या कहना।।
दुनियाँ में.....

4. यहाँ यात्री आते हैं भारी, पूजा करते न्यारी–न्यारी।
जिनकी पूजा का क्या कहना, जिनकी अर्चा का क्या कहना।।
दुनियाँ में.....

5. यहाँ रचना प्यारी–प्यारी है, यहाँ खिली 'विशद' फुलवारी है।
इस क्षेत्र की महिमा क्या कहना, इस क्षेत्र की गरिमा क्या कहना।।
दुनियाँ में.....

(तर्ज– चाँदी की दीवार....)

सारे जग से प्यारा वन्दे, चंवलेश्वर शुभ नाम है।
पार्श्व प्रभु के चरण कमल में, मिलते चारों धाम है।।–2

1. पार्श्वनाथ का वन्दन करने, को बन्धु जब जायेगा।
बिगड़ा भाग्य तुम्हारा भाई, भाग्योदय हो जाएगा।
पार्श्व प्रभु के चरणों आकर, करना विशद प्रणाम है।। सारे जग.....

2. तीर्थ वन्दना करले तुझको, भव से पार लगा देगा।
पारस बाबा तेरा इक दिन, सोया भाग्य जगा देगा।
पापी से भी पापी को यहाँ, मिल जाता विश्राम है।। सारे जग.....

3. मानव जीवन तूने पगले, जिनकी कृपा से पाया है।
यह भी पुण्य उदय है तेरा, जैन धर्म अपनाया है।
पुण्य पाप करने वाले का, आज का कल अन्जाम है।। सारे जग.....

4. पर्वत की चोटी पर प्रभु ने, अपना धाम बनाया है।
बनी तलहटी में चौबीसी, का भी दर्शन पाया है।
क्षेत्रपाल का चौबीसी के, पास 'विशद' स्थान है ।। सारे जग.....

(तर्ज– सूरज कब दूर गगन से....)

चंवलेश्वर तीर्थ हमारा, लगता है प्यारा–प्यारा।
दिखता है अजब नजारा, पाते सब जीव सहारा।।
हे पार्श्व प्रभु, धन्य तव दर्शन है, चरणों में वन्दन है।।

1. यह तीर्थ कहा है पावन, यहाँ जो श्रद्धा से आएँ।
वह अपने इस जीवन में, मन चाही खुशियाँ पाएँ।
हैं पार्श्वनाथ दुखहारी, जो मैटें दुःख जन–जन के।
अब भाव बनाओ अपने, जिनराज चरण अर्चन के।। हे पार्श्व प्रभु.....

2. हे वीतराग अविकारी, हर दिल में तुम बस जाओ।
भक्तों की भटकी नौका, भव सागर पार लगाओ।
अब मुक्ति मार्ग दिखाओ, हम बंधे कर्म बन्धन में।
अब प्रेम सुधा बरसाओ, बश जाओ तुम तन मन में।। हे पार्श्व प्रभु.....

3. दिनकर तुम श्रेष्ठ गगन के, हम भक्त सभी हैं तारे।
रोशन कर दो इस जग को, हम आस लगाए द्वारे।
चारित्र की पावन खुशबू, बहती तव नाथ शरण में।
हम 'विशद' अर्घ्य यह लाए, तेरे द्वय पाक चरण में।। हे पार्श्व प्रभु.....

परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंॐ
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वनन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंॐ

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैं॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछताना॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैं॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना था॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैं॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमाल॥

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कण॥
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थी॥
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
in vkpk;Z izfr"Bk dk 'kqHk] nks gtkj lu~ ik¡p jgkA
rsjg Qjojh calr iapeh] cus xq# vkpk;Z vgkAA
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

प.पू. आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी का चालीसा

दोहा– क्षमा हृदय है आपका, विशद सिन्धु महाराज।
दर्शन कर गुरुदेव के, बिगड़े बनते काज।।
चालीसा लिखते यहाँ, लेकर गुरु का नाम।
चरण कमल में आपके, बारम्बार प्रणाम।।

(चौपाई)

जय श्री 'विशद सिन्धु' गुणधारी, दीनदयाल बाल ब्रह्मचारी।
भेष दिगम्बर अनुपम धारे, जन–जन को तुम लगते प्यारे।।
नाथूराम के राजदुलारे, इंदर माँ की आँखों के तारे।
नगर कुपी में जन्म लिया है, पावन नाम रमेश दिया है।।
कितना सुन्दर रूप तुम्हारा, जिसने भी इक बार निहारा।
बरवश वह फिर से आता है, दर्शन करके सुख पाता है।।
मन्द मधुर मुस्कान तुम्हारी, हरे भक्त की पीड़ा सारी।
वाणी में है जादू इतना, अमृत में आनन्द न उतना।।
मर्म धर्म का तुमने पाया, पूर्व पुण्य का उदय ये आया।
निश्छल नेह भाव शुभ पाया, जन–जन को दे शीतल छाया।।
सत्य अहिंसादि व्रत पाले, सकल चराचर के रखवाले।
जिला छतरपुर शिक्षा पाई, घर–घर दीप जले सुखदाई।।
गिरि सम्मेदशिखर मनहारी, पार्श्वनाथजी अतिशयकारी।
गुरु विमलसागरजी द्वारा, देशव्रतों को तुमने धारा।।
गुरु विरागसागर को पाया, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाया।
है वात्सल्य के गुरु रत्नाकर, क्षमा आदि धर्मों के सागर।।
अन्तर में शुभ उठी तरंगे, सद् संयम की बढ़ी उमंगें।
सन् तिरान्वे श्रेयांसगिरि आये, दीक्षा के फिर भाव बनाए।।
दीक्षा का गुरु आग्रह कीन्हें, श्रीफल चरणों में रख दीन्हें।
अवसर श्रेयांसगिरि में आया, ऐलक का पद तुमने पाया।।
अगहन शुक्ल पञ्चमी जानो, पचास बीससौ सम्वत् मानो।
सन् उन्नीस सौ छियानवे जानो, आठ फरवरी को पहिचानो।।

विरागसागर गुरु अंतरज्ञानी, अन्तर्मन की इच्छा जानी।
दीक्षा देकर किया दिगम्बर, द्रोणगिरी का झूमा अम्बर।।
जयकारों से नगर गुँजाया, जब तुमने मुनि का पद पाया।
कीर्ति आपकी जग में भारी, जन–जन के तुम हो हितकारी।।
परपीड़ा को सह न पाते, जन–जन के गुरु कष्ट मिटाते।
बच्चे बूढ़े अरु नर–नारी, गुण गाती है दुनियाँ सारी।।
भक्त जनों को गले लगाते, हिल–मिलकर रहना सिखलाते।
कइ विधान तुमने रच डाले, भक्तजनों के किए हवाले।।
मोक्ष मार्ग की राह दिखाते, पूजन भक्ति भी करवाते।
स्वयं सरस्वती हृदय विराजी, पाकर तुम जैसा वैरागी।।
जो भी पास आपके आता, गुरु भक्ति से वो भर जाता।
'भरत सागर' आशीष जो दीन्हें, पद आचार्य प्रतिष्ठा कीन्हें।।
तेरह फरवरी का दिन आया, बसंत पंचमी शुभ दिन पाया।
जहाँ–जहाँ गुरुवर जाते हैं, धरम के मेले लग जाते हैं।।
प्रवचन में झंकार तुम्हारी, वाणी में हुँकार तुम्हारी।
जैन–अजैन सभी आते हैं, सच्ची राहें पा जाते हैं।।
एक बार जो दर्शन करता, मन उसका फिर कभी न भरता।
दर्शन करके भाग्य बदलते, अंतरमन के मैल हैं धुलते।।
लेखन चिंतन की वो शैली, धो दे मन की चादर मैली।
सदा गूँजते जय–जयकारे, निर्बल के बस तुम्ही सहारे।।
भक्ति से हम शीश झुकाते, 'विशद गुरु' तुमरे गुण गाते।
चरणों की रज माथ लगावें, करें 'आरती' महिमा गावें।।

दोहा– 'विशद सिन्धु' आचार्य का, करें सदा हम ध्यान।
माया मोह विनाशकर, हरें पूर्ण अज्ञान।।
सूर्योदय में नित्य जो, पाठ करें चालीस।
सुख–शांति सौभाग्य का, पावे शुभ आशीष।।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:– माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय–जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन–मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य एवं विधान सूची

1. पंच जाप्य
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह
3. धर्म की दस लहरें
4. विराग वंदन
5. बिन खिले मुरझा गये
6. जिंदगी क्या है ?
7. धर्म प्रवाह
8. भक्ति के फूल
9. विशद श्रमणचर्या (संकलित)
10. विशद पंचागम संग्रह-संकलित
11. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद
12. इष्टोपदेश चौपाई अनुवाद
13. द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
14. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई अनुवाद
15. समाधि तंत्र चौपाई अनुवाद
16. सुभाषित रत्नावली पद्यानुवाद
17. संस्कार विज्ञान
18. विशद स्तोत्र संग्रह
19. भगवती आराधना, संकलित
20. जरा सोचो तो !
21. विशद भक्ति पीयूष पद्यानुवाद
22. चिंतन सरोवर भाग-1, 2
23. जीवन की मन: स्थितियाँ
24. आराध्य अर्चना, संकलित
25. मूक उपदेश कहानी संग्रह
26. विशद मुक्तावली (मुक्तक)
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2
28. विशद प्रवचन पर्व
29. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
30. श्री विशद नवदेवता विधान
31. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान
32. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान
33. चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
34. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
35. सर्व मंगलदायक श्री नेमिनाथ पूजन विधान
36. विघ्न विनाशक श्री महावीर विधान
37. शनि अरिष्ट ग्रह निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
38. कर्मजयी 1008 श्री पंचबालयति विधान
39. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
40. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
41. श्री तीर्थंकर निर्वाण सम्मेदशिखर विधान
42. श्री श्रुत स्कंध विधान
43. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
44. श्री परम शांति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
45. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान
46. वाग्ज्योति स्वरूप वासुपूज्य विधान
47. श्री याग मण्डल विधान
48. श्री जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान
49. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
50. विशद पञ्च विधान संग्रह
51. कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
52. विशद सुमतिनाथ विधान
53. विशद संभवनाथ विधान
54. विशद लघु समवशरण विधान
55. विशद सहस्रनाम विधान
56. विशद नंदीश्वर विधान
57. विशद महामृत्युञ्जय विधान
58. विशद सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान
59. लघु पञ्चमेरु विधान एवं नंदीश्वर विधान
60. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
61. श्री दशलक्षण धर्म विधान
62. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
63. श्री सिद्धचक्र विधान